ओ३म्

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५६ अंक - १६ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र अगस्त (द्वितीय) २०१४

महर्षि दयानन्द सरस्वती

लाला लाजपत राय जी का पैतृक घर

लाला लाजपत राय जी का युवावस्था का चित्र

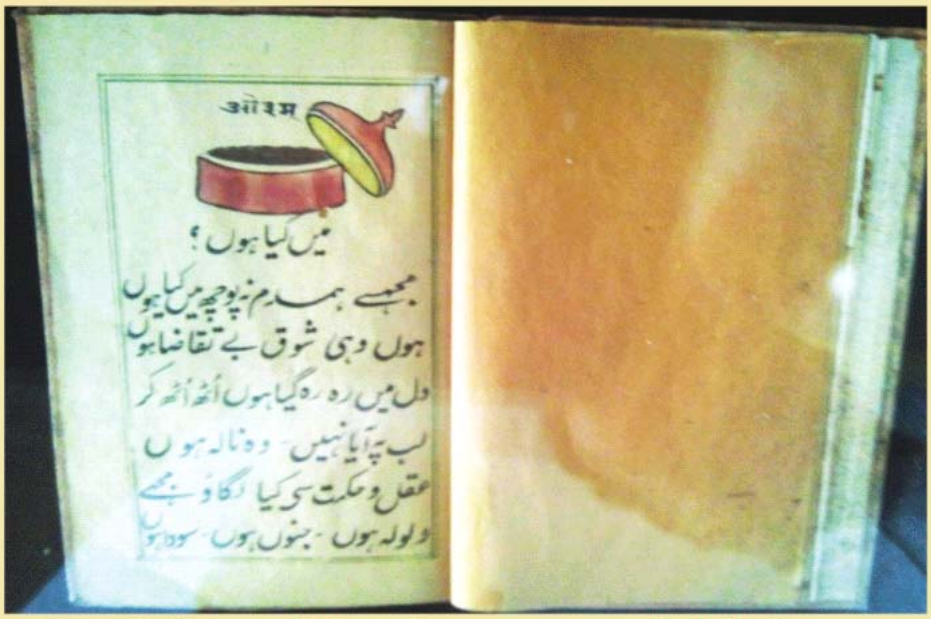

पं. चमूपति जी द्वारा हस्तलिखित एवं लाला लाजपत राय जी को भेंट किया गया
उर्दू कविता संग्रह 'खाके-शहिदां' (हुतात्माओं की मिट्टी)

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ अंक : १६
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: भाद्रपद कृष्ण, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अगस्त द्वितीय २०१४

अनुक्रम

१. वैदिक इतने अवैदिक क्यों?	सम्पादकीय	०४
२. प्राप्तं प्रापणीयम्	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	११
४. ज्योतिष्टोम अग्निष्टोमाख्यस्य.....	सनत्कुमार:	१९
५. मेरे गुरुवर	आचार्य प्रदीप कुमार	२४
६. पुस्तक - परिचय		२६
७. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२७
८. विरजानन्द दैवकरणि : बाणभट्ट सम्मान से सम्मानित		३०
९. भगवान कौन?	महेन्द्र आर्य	३४
१०. जिज्ञासा समाधान-६९	आचार्य सोमदेव	३६
११. संस्था-समाचार		३९
१२. आर्यजगत् के समाचार		४२

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

वैदिक इतने अवैदिक क्यों?

वेद प्रताप वैदिक जी का जीवन जिस आदर्श और निष्ठा से प्रारम्भ हुआ था, उसका पतन किसी भी सद्भाव रखने वाले व्यक्ति के लिए व्यथित करने वाला है। वैदिक अपने अध्ययन काल से अपनी राष्ट्रभक्ति के कारण समाज में प्रशंसा और सहानुभूति के पात्र रहे हैं। आपके पिता श्री जगदीश प्रसाद वैदिक सिद्धान्तनिष्ठ आर्य थे। जब भी मेरी उनसे भेंट हुई है उन्होंने अपने व्यापार में सत्य-व्यवहार के पालन की चर्चा की है। उन्होंने अपने जीवन में कभी रिश्वत नहीं दी। वे कहा करते थे आयकर बिक्रीकर अधिकारियों को उन्होंने कभी चाय भी नहीं पिलाई और व्यापार को सफलतापूर्वक चलाया। उनके विचार और सिद्धान्तनिष्ठा का पता इसी बात से लगता है कि उन्होंने अपने पुत्र का नाम वेदप्रताप रखा तथा परम्परा से वेदप्रताप को वैदिक उपनाम मिला। वैदिक के पिता जी इतने सिद्धान्त-प्रिय थे कि जब उन्हें लगा वैदिक अग्निवेश के साथ हैं तो उन्होंने अपने पुत्र से ही मिलने से इन्कार कर दिया। वेदप्रताप वैदिक अपने अध्ययन काल में चर्चा में तब आये जब उन्होंने अपना शोध-प्रबन्ध हिन्दी में लिखा और १९६५ में इण्डियन स्कूल ऑफ इन्टरनेशनल स्टैण्डीज में राजनीति पर आपना शोध ग्रन्थ हिन्दी में लिखने की माँग की थी। संस्थान द्वारा उसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया गया। इस बात को संसद में उठाया गया, सरकार के हस्तक्षेप के पश्चात् उनका शोध-प्रबन्ध स्वीकार किया गया। उन्होंने हिन्दी भाषा के समर्थन के लिए अनेक कार्यक्रम किये। इन्दौर में बड़ा सम्मेलन किया। पुस्तकें लिखी, समय-समय पर अनेक लेख लिखे, प्रखर ओजस्वी वक्ता, योग्य लेखक के रूप में उनकी यात्रा शिखर को छूती उससे पहले उनकी यात्रा का उतार प्रारम्भ हो गया। सम्भवत: जो लोग बहुत जल्दी और ज्यादा चाहते हैं, उनके साथ ऐसा ही होता है जो आज वैदिक के साथ हो रहा है।

कुछ समय पूर्व एक कार्यक्रम में वैदिक जी से भेंट होने पर मैंने उन्हें कहा था- वैदिक जी आपको देखकर ऋषि दयानन्द की उक्ति का स्मरण होता है जब ऋषि दयानन्द ने कहा था अमीचन्द हो तो हीरे- तब वैदिक जी ने वाक्य पूरा किया था- कीचड़ में पड़े हुए हो। यह बात इसलिए कही गई थी कि वैदिक जी को स्वामी अग्निवेश का साथ आवश्यक लगता था सम्भवत: यह मित्रता उनकी मनोकामना पूर्ण करने में सहायक होती होगी। स्वामी अग्निवेश को राज्यसभा सदस्यता, उपराष्ट्रपति का पद बहुत उल्टा-सीधा करने के बाद भी नहीं मिला तो वैदिक जी को क्या मिलना था। वैदिक जी ने भी अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए कई तीर्थयात्रायें कीं, कई पुरश्चरण किये परन्तु मनोकामना सफलीभूत नहीं हुई। आज वे रामदेव जी की शरण में हैं परन्तु अभी उन्होंने जो कार्य किया है, उससे तो रामदेव जी भी उनका उद्धार करने में समर्थ होंगे इसमें सन्देह है। वैदिक जी की निष्ठा पर प्रश्नवाचक चिह्न अब पहली बार लगे हैं ऐसा नहीं है। इससे पहले जब बहुत सारे पत्रकारों को मुलायमसिंह ने अपने मुख्यमन्त्रित्व के काल में उपकृत किया था उन नामों की सूची में वेदप्रताप वैदिक का नाम बहुत प्रारम्भ में था। उसी के कारण उनको पत्रकारिता की मुख्यधारा छोड़कर स्वतन्त्र पत्रकारिता का क्षेत्र चुनना पड़ा। अब जब पाकिस्तान की यात्रा का विवरण सामने आया तो किसी पत्रकार का किसी से भी मिलना कुछ अनुचित है ऐसा नहीं लगा। दूरदर्शन पर जब वैदिक जी का साक्षात्कार प्रसारित हो रहा था तब वैदिक जी के मुख से सईद के लिए जो सम्मानजनक सम्बोधन सुनने में आये उनसे कुछ अटपटा जरूर लगा था, जब वैदिक जी ने बताया पाकिस्तान जाने वाले वे अकेले पत्रकार नहीं थे तब भी लगा था कि सभी पत्रकारों के साथ वैदिक जी ने अपनी पाकिस्तान यात्रा पूरी की, स्वयं वैदिक जी ने भी कहा उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया, दूरदर्शन और समाचार पत्रों में उनकी चर्चा होती है तो इससे उनके नाम का प्रचार-प्रसार ही होगा।

इस घटना की जो जाँच पड़ताल हुई और दूरदर्शन व समाचार पत्रों में जो आया उससे पता लगता है कि वैदिक जी की यात्रा उतनी सरल नहीं है जितनी वे बताने का प्रयत्न कर रहे हैं। वैदिक जी के चाहने वाले पत्रकारों ने उन्हें फेंकू, बिना मांगे सलाह देने वाला, महत्त्वाकांक्षी कहकर निरपराध सिद्ध करने का प्रयास किया। उनका मानना है यह वैदिक जी का स्वभाव है कि वे प्रत्येक देश के प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति से अपने व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाने का प्रयास करते हैं। आज इसके साथ भोजन किया। कल

किससे गप्पें लगाईं, किसको मिला और उनको क्या परामर्श दिया? यह कथा भारत की हो या पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, इराक की, सब देशों के बड़े शासनाध्यक्ष, बड़े अधिकारी पत्रकार सब उनके व्यक्तिगत परिचित हैं वे सब के सलाहकार हैं। इस व्यवहार के कारण वे इस सईद प्रकरण में फंस गये हैं। वैसे उन्होंने कोई सोच समझकर देश-विरोधी कार्य नहीं किया है, न ही उनसे इस प्रकार के कार्य की अपेक्षा की जाती है।

यह बात स्वीकार की जा सकती थी यदि बात इतनी ही होती। इस यात्रा के जो तथ्य प्रकाश में आये हैं उनसे वैदिक जी के आयोजकों से सम्बन्ध सिद्ध होते हैं और इस यात्रा के आयोजक पहले भी देशद्रोह के कार्यों में लिप्त थे आज भी उन्हीं गतिविधियों में संलग्न हैं। आश्चर्य है वेदप्रताप वैदिक ऐसे व्यक्ति से मिलने गये जो भारत का अपराधी है। उसका भारत द्वेष किस सीमा तक बढ़ा हुआ है यह कौन नहीं जानता, स्वयं वैदिक हाफिज सईद की उस घोषणा को भूले नहीं होंगे, जब पाकिस्तानी सेना के लोग सीमा पर हमारे सैनिकों के सिर काट कर अपने साथ ले गये थे तब हाफिज सईद ने घोषणा की थी वह प्रत्येक भारतीय सिर के लिए पाँच लाख रुपये का पुरस्कार पाकिस्तानी सेना के सैनिकों को देगा। हाफिज सईद मुम्बई पर आतंकी आक्रमण का सूत्रधार था, ऐसे व्यक्ति से बात करके वैदिक उसे निरपराध बताने की चेष्टा कर रहे हैं, यह किसी भी प्रकार वैदिक को एक सत्यान्वेषी पत्रकार सिद्ध करने का प्रमाण नहीं हो सकता। ऐसी परिस्थिति में वैदिक न तो अपने को अनजान बता सकते हैं न निर्दोष सिद्ध कर सकते हैं। इन पत्रकारों को जिन लोगों ने पाकिस्तान भेजने की योजना बनाई, यात्रा का निमन्त्रण दिया, यात्रा का तथा वहाँ का स्थानीय व्यय वहन किया वे लोग अच्छी प्रकार जानते थे कि आज भारत सरकार का जो दृष्टिकोण है वह न कांग्रेस वाला है न पाकिस्तान के लिए अनुकूल है तो फिर किसने इन पत्रकारों को, किस उद्देश्य से पाकिस्तान बुलाया। पाकिस्तान प्रशासन, पाक सेना तथा पाक गुप्तचर संस्था आईएसआाई इन पत्रकारों के सत्कार के लिये क्यों व्याकुल थे, क्योंकि इस यात्रा में जो लोग पत्रकारों के नाम पर सम्मिलित हुए हैं उनमें पाकिस्तान की वकालत करने वालों में प्रमुख हैं बरखा दत्त, वरदाभाई, मणिशंकर अय्यर। अय्यर के आग्रह पर वैदिक जी यात्रा करने गये ऐसा उनका कहना है। इससे स्पष्ट है कि वैदिक और अय्यर के प्रयोजन दो नहीं हो सकते। जैसे वेदप्रताप वैदिक हाफिज सईद से अब मिले हैं मणिशंकर अय्यर भी फरवरी २०१२ में हाफिज सईद से भेंट कर चुके हैं। इस यात्रा में और भी उल्लेखनीय नाम हैं, उनमें कश्मीर पर मध्यस्थता करने वाले पड़गाँवकर, सलमान खुर्शीद, जोया हसन। क्या इनके साथ वेद प्रताप वैदिक का नाम किसी और प्रयोजन से यात्रा करना सिद्ध करता है। ये लोग अच्छी प्रकार समझते हैं कि पाकिस्तान से सम्बन्ध कभी भी सामान्य होने वाले नहीं है परन्तु इन पत्रकारों को शान्ति की आशा में यात्रा करते रहना अच्छा लगता है। पाकिस्तान की यात्रा से इन पत्रकारों को नाम के साथ पैसा भी मिलता है। आश्चर्य की बात है इनके साथ गये १५ लोगों को छोड़कर वैदिक का हाफिज सईद से मिलना भारत में किसी को भी पसन्द नहीं आया। हाफिज सईद से भेंट करके वैदिक जी ने देशद्रोही लोगों के साथ अपने सम्बन्धों को स्वीकार कर लिया। इससे पहले पाकिस्तानी पत्रकार गुलाम नबी फई ने भी भारत के पत्रकारों की पाकिस्तान यात्रा करवाई थी। तब भी अनेक पत्रकार यह कहते हुए अपने बचाव में लगे थे हमें पता नहीं था कि फई पाकिस्तान आईएसआई का दलाल है। वही परिस्थिति आज वैदिक की है।

इस पाकिस्तान यात्रा में वैदिक का उल्लेख जिस प्रकार किया गया वह बड़ा धोखाभरा है। वैदिक ने यात्रा की मणिशंकर अय्यर, सलमान खुर्शीद के साथ और संसद में आरोप लगाया जा रहा है वेदप्रताप वैदिक संघ से जुड़े हुए व्यक्ति हैं। आज से पहले तो कभी वैदिक का नाम संघ से नहीं जुड़ा। वास्तव में वैदिक को संघ से जोड़ने का प्रयोजन क्या हो सकता है? वह है हाफिज सईद और वेदप्रताप वैदिक की भेंट को भारत सरकार से जोड़ना। सोचने की बात है भारत सरकार को हाफिज सईद से बात करने की आवश्यकता क्या है? और यदि बात करनी भी होती तो उसे वैदिक जैसे व्यक्ति की क्या आवश्यकता है? सरकार के पास सक्षम लोगों की कोई कमी नहीं जो सरकार उनके स्थान पर वैदिक को अपना दूत बनाकर हाफिज सईद के पास भेजे। यथार्थ तो यह है कि इस यात्रा का आयोजन एक क्षेत्रीय शान्ति प्रयास करने वाली संस्था ने किया था जिसमें मणिशंकर अय्यर कार्यकारिणी के सदस्य है, इसी संस्था ने इन पत्रकारों की यात्रा और इनके भोज का आयोजन किया था। इस संस्था के संचालकों में पाकिस्तानी सेना के पूर्व अधिकारी तथा आईएसआई के

सेवानिवृत्त अधिकारी सम्मिलित हैं। इससे ही इस संस्था के कार्य और उद्देश्य का पता चल जाता है।

वैदिक जी के कश्मीर सम्बन्धी विचार अनुचित नहीं आपत्तिजनक भी हैं। उन्होंने कश्मीर को लेकर जो विचार व्यक्त किये हैं वे उन्हें देश के विरुद्ध ले जाते हैं। वैदिक जी का यह कहना कि आतंकवाद कश्मीर आन्दोलन का परिणाम है, यह पाकिस्तान का खुला समर्थन है। कोई भी बुद्धिमान् व्यक्ति ऐसा तर्कहीन विचार स्वीकार नहीं कर सकता। क्या अफगानिस्तान, ईरान, इराक का आतंकवाद कश्मीर समस्या का परिणाम है? वहाँ के आतंकवादियों में और कश्मीर के आतंकवादियों में सम्बन्ध है। वह सम्बन्ध देश का नहीं उद्देश्य का है।

कश्मीर विवाद में पाकिस्तान और कश्मीरियों को भागीदार बनाना और कश्मीर समस्या को चार पक्षों का है, यह कहकर वैदिक जी पड़गाँवकर की पत्रकारिता कर रहे हैं जो पाकिस्तानी दलाल फई के इशारे पर काम करते हैं। वैदिक जी की बात न केवल अव्यावहारिक है, अपितु राष्ट्र के विरुद्ध होने से घोर आपत्तिजनक भी है।

वेद प्रताप वैदिक का हाफिज सईद से भेंट करना क्यों अनुचित है, इसको कहने वालों का मत है कि जिन लोगों की ओर से वैदिक हाफिज सईद से मिले हैं वे हाफिज सईद को निर्दोष मानते हैं और निर्दोष सिद्ध करना चाहते हैं। ऐसे लोगों का प्रतिनिधि बनकर वैदिक देशद्रोही लोगों की सहायता कर रहे हैं। वैदिक ने जो प्रश्न पूछे हैं और जो हाफिज सईद ने उत्तर दिया है उनसे भी हाफिज सईद को एक सद्भावी सभ्य व्यक्ति सिद्ध करने का प्रयास है जो देश के अपराधी को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयास लगता है।

वास्तविकता तो यह है कि वैदिक उन पत्रकारों की श्रेणी में आ गये हैं जो पत्रकारिता न करके पत्रकारिता के नाम पर देश के शत्रुओं से मिल कर दलाली खाने में भरोसा करते हैं। यही कारण है कि आज उनकी निष्ठा और देशभक्ति संदिग्ध श्रेणी में आ गई है। यह उनके मित्रों व सहानुभूति रखने वालों के लिए चिन्ता का विषय है। कहा गया है-

नरपति हितकर्त्ता द्वेष्यतां याति लोके,
जनपद हितकर्त्ता त्यज्यते पार्थिवेन्द्रैः।
इति महति विरोधे वर्तमाने समाने,
नृपति जनपदानां दुर्लभः कार्यकर्त्ता।।

- धर्मवीर

जीवन का दर्शन है यही

- राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

जब तक है तन में प्राण तू,
कुछ काम कर, कुछ काम कर।
जीवन का दर्शन है यही,
मत बैठकर विश्राम कर।।
मन मानियाँ सब छोड़ दे,
इतिहास से कुछ सीख ले।
पायेगा अपना लक्ष्य तू,
मन को तनिक कुछ थाम ले।।

जीना जो चाहे शान से,
मन में तू अपने ठान ले।
यह वेद का आदेश है,
अविराम तू संग्राम कर।।
रे जान ले, तू मान ले,
कर्त्तव्य सब पहचान ले।
रचकर नया इतिहास कुछ,
तू पूर्वजों का नाम कर।।
भोगों में सब कुछ मानना,
जीवन नहीं यह मरण है।
इस उलटी पुलटी चाल से,
न देश को बदनाम कर।।

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते, इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

जैसे सकल ऐश्वर्य का देने वाला जगदीश्वर है वैसे सभाध्यक्षादि मनुष्यों को होना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.३०

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण.....

प्राप्तं प्रापणीयम्

– स्वामी विष्वङ्

शरीरधारी आत्मा निरन्तर प्रयत्न करता है। उसका प्रयत्न क्षण भर के लिए भी नहीं रुकता है अर्थात् आत्मा सतत्-निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। ऐसा इसलिए होता है कि प्रयत्न गुण आत्मा का स्वभाव है या आत्मा का स्वरूप है। क्या निद्रा काल में भी आत्मा प्रयत्न करता है? हाँ, निद्रा काल हो या स्वप्न काल हो, आत्मा सदा प्रयत्न करता रहता है। प्रयत्न करना बन्द हो जाये, तो आत्मा अपने प्रयत्न स्वरूप से च्युत-अलग हो जायेगा और ऐसा कभी सम्भव नहीं होगा। हाँ, यदि आत्मा को संवेदन शून्य बना दिया जाये अर्थात् मूर्छित-बेहोश कर दिया जाये, तो आत्मा प्रयत्न करता हुआ नहीं दिखेगा या प्रयत्न नहीं करेगा। ऐसी स्थिति में आत्मा का प्रयत्न दबा हुआ रहेगा अर्थात् प्रयत्न कार्यरत नहीं है, ऐसा माना जायेगा।

यदि कोई यह प्रश्न करे कि आत्मा प्रयत्न क्यों करता है? इसका समाधान है कि आत्मा अप्राप्त को प्राप्त करने और प्राप्त को दूर करने के लिए प्रयत्न करता है। अप्राप्त क्या है? अप्राप्त सुख-आनन्द है, जिसे प्राप्त करना चाहता है। दूर क्या करना चाहता है? प्राप्त दुःख-कष्ट-पीड़ा आदि को दूर करना चाहता है। अप्राप्त सुख-आनन्द को प्राप्त करने और प्राप्त-दुःख-कष्ट आदि को दूर करने का प्रयत्न प्रत्येक जीवात्मा करता है। संसार में ऐसा कोई जीवात्मा नहीं है, जो इस कार्य को नहीं करता हो। हाँ, जो जीवात्मा मुक्ति-मोक्ष में रह रहा हो, वह जीवात्मा इस कार्य को नहीं करता है। मुक्तात्मा इस कार्य को मुक्त-मोक्ष होने से पहले कर चुका होता है। इसलिए मोक्ष में इस कार्य को करने की आवश्यकता नहीं होती है।

संसार की दशा में शरीर धारी जीवात्मा अर्थात् मनुष्य अप्राप्त सुख को प्राप्त करने के लिए जीवन भर प्रयत्न करता ही रहता है। बहुत से सुख प्राप्त भी होते हैं, परन्तु मनुष्य को तृप्ति नहीं होती है असन्तोष रहता है। असन्तोष के कारण शान्ति नहीं मिलती है। अशान्ति के कारण अप्रसन्न ही बना रहता है। दूसरी ओर प्राप्त दुःख को दूर करने के लिए जीवन भर प्रयत्न करता ही रहता है। बहुत से दुःख दूर भी होते हैं, परन्तु सारे दुःख दूर नहीं हो पाते हैं कुछ नये दुःख उत्पन्न भी होते हैं। इस कारण से भी मनुष्य अशान्त, अप्रसन्न, भयभीत और परतन्त्र अनुभव करता है। मनुष्य का सदा यह प्रयत्न था, है और रहेगा कि वह ऐसा प्रयत्न करना चाहता है, जिस प्रयत्न से एक बार अप्राप्त ऐसे सुख को प्राप्त कर ले जिसके प्राप्त होने पर दुबार प्राप्त करने की इच्छा न हो और उस प्रकार का प्रयत्न दुबारा न करना पड़े। इसी प्रकार ऐसा प्रयत्न करे कि प्राप्त दुःख को एक बार ऐसे दूर करे जिसके दूर करने पर दुबारा दूर करना न पड़े। मनुष्य इसी इच्छा को ले कर प्रयत्न करे, तो निश्चित रूप से कभी न कभी अपनी इच्छा के अनुरूप सफलता अवश्य प्राप्त होगी। परन्तु सभी मनुष्य ऐसी इच्छा को ले कर प्रयत्न नहीं कर पाते हैं।

प्रायः मनुष्य ऐसी इच्छाओं को ले कर प्रयत्न करते हैं, जो कभी पूर्ण न होने वाली हैं। कोई मनुष्य मकान (भवन) की इच्छा को लेकर, कोई वाहन (गाड़ी) की इच्छा को लेकर, कोई जमीन (भूमि) की इच्छा को लेकर, कोई धन (रुपये) की इच्छा को लेकर, कोई सोना (सुवर्ण), चाँदी की इच्छा को लेकर, कोई नौकरी की इच्छा को लेकर, कोई विदेश जाने की इच्छा जैसी अलग-अलग इच्छाओं को लेकर प्रयत्न करते जाते हैं। किसी अंश में उन इच्छाओं का प्रतिफल प्राप्त भी होता है, परन्तु उनकी इच्छाएँ समाप्त नहीं होती हैं बल्कि और इच्छाएँ बढ़ती हैं। इस प्रकार इच्छाओं की शृंखला विस्तार को प्राप्त होती है और मनुष्य जैसे-जैसे आगे बढ़ता है वैसे-वैसे उसकी इच्छाएँ भी और अधिक बढ़ती जाती हैं। बहुत सारी इच्छाओं को लेकर मनुष्य जब प्रयत्न करता है तब उसकी इच्छाओं की पूर्ति जिस रूप में होनी चाहिए उस रूप में नहीं हो पाती हैं। ऐसी स्थिति में मनुष्य को बहुत अधिक दुःख होता है और वह दुःख असहनीय बन जाता है।

अध्यात्म-मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति योगाभ्यास करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि संसार में कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जिसको प्राप्त करने पर फिर किसी अन्य वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न नहीं होती हो। इसलिए आध्याात्मिक व्यक्ति कोई ऐसी सांसारिक इच्छा को उत्पन्न ही नहीं करता है। फिर क्या आध्यात्मिक व्यक्ति में किसी प्रकार की इच्छा नहीं होती है? हाँ, होती है परन्तु ईश्वर को प्राप्त करने की ही इच्छा होती है। क्योंकि आध्यात्मिक व्यक्ति इस बात को अच्छी प्रकार जानता है कि ईश्वर को

प्राप्त करने पर सारी इच्छाएँ अपने आप समाप्त हो जाती हैं। मनुष्य की बुद्धिमानी भी उसी में है कि जिसको प्राप्त करने पर सब कुछ प्राप्त हो जाये कुछ और प्राप्त करने की इच्छा ही न रहे। ईश्वर एक ऐसा पदार्थ है, जिसको प्राप्त करने पर मनुष्य में कुछ और प्राप्त करने की इच्छा ही नहीं होती है अकेला ईश्वर मनुष्य की सारी इच्छाओं की पूर्ति कर देता है। इसलिए मनुष्य और इच्छाओं की कामना ही नहीं करता है। क्योंकि ईश्वर की प्राप्ति से मनुष्य को पूर्ण तृप्ति, प्रसन्नता, निर्भयता, शान्ति और आनन्द मिल जाता है। इसलिए जहाँ पूर्णता हो वहाँ इच्छाओं का क्या काम (कार्य) है। इसी कारण ईश्वर प्राप्ति से सारी इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं।

जब आध्यात्मिक व्यक्ति को ईश्वर की प्राप्ति होती है तब उसे विशेष अनुभूति होती है और वह अनुभूति है- **'प्राप्तं प्रापणीयम्'** अर्थात् संसार में आकर जो प्राप्त करना चाहिए था वह प्राप्त हो गया अब प्राप्त करने योग्य और कुछ भी नहीं है। ईश्वर को प्राप्त करने पर ही ऐसी अनुभूति होती है। ईश्वर के अतिरिक्त किसी भी पदार्थ को प्राप्त करने पर ऐसी अनुभूति कभी नहीं होती है न हो सकती है। ऐसी उपलब्धि योगाभ्यास करने वाले योगी को ही होती है, जिसने समाधि लगा कर ऐसी उपलब्धि को प्राप्त किया है। योगी को प्राप्त होने वाली ऐसी उपलब्धि विश्व के किसी विश्व प्रसिद्ध प्रवक्ता को नहीं मिल सकती है। किसी विश्व प्रसिद्ध नेता, राजा, खिलाड़ी, डॉक्टर-वैद्य, इञ्जीनियर, वकील, अभिनेता, नोबल पुरस्कार प्राप्त विजेता आदि को नहीं मिल सकती है। संसार की दृष्टि में कोई कितना भी बड़ा हो वह कभी भी यह अनुभव नहीं कर सकता है कि ''जो संसार में पाना था सो पा लिया और पाने योग्य मेरे लिए कुछ भी शेष नहीं है।'' यह अनुभव केवल समाधि को प्राप्त योगी ही कर पाता है।

संसार में यह प्रत्यक्ष अनुभव किया जाता है कि जो-जो विश्व प्रसिद्ध व्यक्ति होते हैं, उनमें अन्य जनता की अपेक्षा सब से अधिक महत्त्वाकांक्षाएँ होती हैं। सामान्य जन की इच्छाएँ सामान्य रूप से होती हैं परन्तु विश्व प्रसिद्ध व्यक्तियों की इच्छाएँ विशेष रूप से होती हैं। जिनकी इच्छाएँ जितनी विशेष होती हैं, उनकी अपेक्षाएँ भी उतनी ही अधिक होती हैं। संसार में यह प्रसिद्ध नियम है कि सब अपेक्षाओं की पूर्ति नहीं हुआ करती है। जहाँ अपेक्षाएँ हैं वहाँ दु:ख है और जहाँ दु:ख है वहाँ अशान्ति, अतृप्ति आदि हैं। ऐसी स्थिति में मनुष्य कभी भी अपने लक्ष्य को पूर्ण नहीं कर पायेगा। इसलिए बुद्धिमानी उसी में है जिस एक इच्छा की पूर्ति से सब इच्छाओं की पूर्ति होती हो, उसी एक इच्छा को पूर्ण करने के लिए यत्न करना चाहिए। अनेक इच्छाओं को लेकर चलने वाले दु:ख से कभी अलग नहीं हो पायेंगे। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि **'प्राप्तं प्रापणीयम्'** की स्थिति को पाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

'प्राप्तं प्रापणीयम्' की स्थिति ईश्वर को पाने पर ही सम्भव है। इसलिए आध्यात्मिक व्यक्ति का कर्त्तव्य बनता है कि वह ईश्वर को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करे। ईश्वर-प्राप्ति, योग को जीवन में धारण करने पर सम्भव हो पायेगा। यद्यपि आध्यात्मिक व्यक्ति योग को अपने जीवन का अंग बना करके तो चलता है, परन्तु योग के आठ अंगों में से जो आधार रूप यम व नियम हैं, उन पर विशेष ध्यान नहीं दे पाता है। आध्यात्मिक व्यक्ति का या तो प्राणायाम रूपी अंग पर विशेष ध्यान रहता है अथवा ध्यान रूपी अंग पर विशेष आकर्षण रहता है। इसलिए व्यक्ति ध्यान करने में विशेष प्रयत्न करता है अर्थात् मन को एकाग्र करने के लिए यत्न करता रहता है। कभी कभी कुछ समय के लिए एकाग्र कर भी लेता है, परन्तु जब-जब ध्यान करता है तब-तब ऐसा ही मन एकाग्र होता हो, ऐसा नहीं हो पाता है। जब मन एकाग्र नहीं होता है तब व्यक्ति खिन्न होता है, चिन्ता करता रहता है कि मन क्यों एकाग्र नहीं हो रहा है? इसी प्रकार कोई व्यक्ति नियम के एक भाग तप को लेकर तपस्या करता है और वह तप भी विशेष रूप से शारीरिक करता है या वाचनिक करता है। परन्तु मानसिक तप नहीं कर पाता है।

जब मनुष्य योग के आठों अंगों में से किसी एक अंग को या किसी एक अंग के एक विभाग मात्र को लेकर प्रयत्न करता है, तो योग में विशेष प्रगति नहीं हो पाती है। इसलिए आध्यात्मिक व्यक्ति को यह विशेष ध्यान रखना पड़ता है कि योग के सभी अंगों (यम, नियम से लेकर ध्यान पर्यन्त) को साथ लेकर प्रयत्न करना चाहिए। कोई यह न सोचे कि समाधि को साथ क्यों नहीं लेकर चलना चाहिए? इसका समाधान इस रूप में समझना चाहिए कि समाधि मनुष्य का लक्ष्य है। समाधि लगाने के लिए यम, नियम से लेकर ध्यान पर्यन्त अंगों का अभ्यास किया जाता है। जिससे समाधि लग सके। हाँ, जब सम्प्रज्ञात समाधि आठवाँ अंग बनेगा तब असम्प्रज्ञात समाधि लक्ष्य बनेगा। इसलिए योग साधक को यम, नियम से लेकर ध्यान

पर्यन्त योग के सभी अंगों को साथ लेकर प्रयत्न करना चाहिए।

प्राय: योग साधक किसी एक योगांग को लेकर या दो या तीन अंगों को लेकर चलता है। इसी कारण योग साधक को सफलता नहीं मिल पाती है। कोई-कोई विरला ही होता है, जो योग के सभी (सातों) अंगों को साथ लेकर चलता है। इसी कारण उसे सफलता मिलती है अर्थात् वह समाधि को प्राप्त कर लेता है। जो सम्प्रज्ञात समाधि को लगाने में सक्षम होता है, वह आगे चल कर असम्प्रज्ञात समाधि भी लगा लेता है अर्थात् ईश्वर साक्षात्कार कर लेता है। सम्प्रज्ञात समाधि में जगत् के कारण सत्व, रज, तम व बुद्धि आदि पदार्थों एवं जीवात्मा का साक्षात्कार होता है। असम्प्रज्ञात समाधि में केवल ईश्वर का साक्षात्कार होता है। जिस योगाभ्यासी को असम्प्रज्ञात समाधि लगती है, वही योगाभ्यासी यह कह सकता है कि **'प्राप्तं प्रापणीयम्'** जो पाना था सो पा लिया। अब और पाने योग्य मेरे लिए संसार में कुछ भी नहीं है। ईश्वर को प्राप्त करने से सब कुछ कैसे प्राप्त होते हैं? या सब कुछ प्राप्त होने के समान कैसे माना जाये? समाधान इस प्रकार समझना चाहिए कि-

मनुष्य जो कुछ भी प्राप्त करना चाहता है, उन सब का उद्देश्य है सुख, तृप्ति, सन्तोष, निर्भयता, शान्ति और स्वतन्त्रता है। मूल में सुख ही एक मात्र उद्देश्य है, क्योंकि सुख में ही तृप्ति, सन्तोष, निर्भयता, शान्ति और स्वतन्त्रता विद्यमान रहती हैं, इस कारण भौतिक पदार्थ पूर्ण सुख प्रदान नहीं कर पाते हैं। इसलिए मनुष्य को अलग-अलग साधनों को अपना कर जीवन-यापन करना पडता है अर्थात् अलग-अलग साधन मिलके सुख को उत्पन्न करते हैं और वह सुख भी अपूर्ण रहता है। इसके विपरीत ईश्वर अकेला पूर्ण सुख प्रदान करता है और उस पूर्ण सुख को प्राप्त कर आत्मा सब प्रकार से निश्चिन्त हो जाता है। ईश्वर सुख प्रदान करता हुआ अतृप्ति, असन्तोष, भय, अशान्ति और परतन्त्रता को भी दूर करता है। पूर्णता में अतृप्ति, असन्तोष, भय, अशान्ति और परतन्त्रता नहीं रह सकते। पूर्णता का अर्थ ही कमी (न्यूनता) का न होना है। इसलिए एक ईश्वर को प्राप्त करने पर ही सब कुछ प्राप्त होने के समान है या सब कुछ प्राप्त हो जाते हैं।

ईश्वर को प्राप्त करने पर ही **'प्राप्तं प्रापणीयम्'** की स्थिति उत्पन्न होती है। परन्तु ईश्वर को प्राप्त करना सरल कार्य नहीं है। संसार में सब से अधिक कठिन कार्य ईश्वर को प्राप्त करना है, इससे अधिक कठिन और कोई कार्य नहीं है। कठिन कार्य अवश्य है परन्तु असम्भव नहीं है। पूर्ण प्रयत्न करने पर ईश्वर अवश्य प्राप्त हो जाता है। आज मनुष्य पूर्ण प्रयत्न नहीं कर पा रहा है। इस कारण मनुष्य को ईश्वर की प्राप्ति= (ईश्वर साक्षात्कार रूपी समाधि) नहीं हो रही है। मनुष्य योग को तो अपना रहा है परन्तु योग के सभी अंगों को नहीं अपना रहा है। इसके पीछे जानकारी का अभाव है। मनुष्य को यह जानकारी (ज्ञान) होनी चाहिए कि समाधि को प्राप्त करने के लिए कितना ज्ञान होना चाहिए। मनुष्य में अविद्या हो या मनुष्य राग-द्वेष आदि से युक्त रहे, तो समाधि नहीं लग सकती है। समाधि को लगाने के लिए अविद्या को नष्ट करना होगा या अविद्या से युक्त हो कर जो कार्य किये जाते हैं। उन कार्यों को रोकना होगा। जब तक मन में अविद्या कार्य करती रहेगी अर्थात् मनुष्य राग-द्वेष से युक्त हो कर कार्य करता रहेगा तब तक समाधि नहीं लग सकेगी। इसलिए अविद्या को रोकना होगा या नष्ट करना होगा। अविद्या रुकेगी तो विद्या=तत्त्वज्ञान आ पायेगा। तत्त्वज्ञान ही समाधि तक पहुँचाने वाला है।

तत्त्वज्ञान का अभिप्राय यथार्थ जानकारी से है। तत्त्वज्ञान को ही वैराग्य कहते हैं। इसलिए वैराग्य समाधि का कारण बनता है। तत्त्वज्ञान यानि वैराग्य और वैराग्य विवेक से प्राप्त होता है। विवेक का अभिप्राय है जो जैसा है उसे उसी रूप में जानना है। योग के आठों अंगों को समझना चाहिए अर्थात् जैसा योग है वैसा ही जानना विवेक है। असम्प्रज्ञात (ईश्वर साक्षात्कार) योग को प्राप्त करने के लिए सम्प्रज्ञात सहित आठ अंग हैं। उन सबको व्यवहार में न लाकर एक अंग (आसन या प्राणायाम या ध्यान) को ही व्यवहार में लाया जाना अविवेक है। अथवा कोई दो या तीन अंगों को ही व्यवहार में लाता है। इसी कारण मनुष्य की समाधि नहीं लग रही है। आध्यात्मिक व्यक्ति आध्यात्मिक-मार्ग में चल कर भी लक्ष्य से दूर रह रहा है। सांसारिक व्यक्ति लक्ष्य से इसलिए दूर है क्योंकि उसने ईश्वर को प्राप्त करने का लक्ष्य ही नहीं बनाया है।

एक ने ईश्वर को प्राप्त करने का लक्ष्य बनाया है और दूसरे ने ईश्वर को प्राप्त करने का लक्ष्य नहीं बनाया है। दोनों ही मनुष्य के प्रयोजन रूपी लक्ष्य से दूर हैं। जिसने लक्ष्य बनाया है उसका लक्ष्य इसलिए पूर्ण नहीं होता क्योंकि उसने मात्र लक्ष्य बनाया। लक्ष्य बनाने मात्र से लक्ष्य की पूर्ति नहीं होती है बल्कि लक्ष्य के अनुरूप प्रयत्न करने से लक्ष्य की पूर्ति होती है। ईश्वर साक्षात्कार जिन उपायों को

अपनाने से होता है, उन उपायों को न अपनाकर कुछ ही उपाय अपनाये जा रहे हैं। यहाँ उपाय हैं योग के आठ अंग और अपनाये जा रहे हैं एक या दो या तीन अंग। इसलिए प्रयत्न कितना भी किया जाये अर्थात् एक अंग पर या दो या तीन अंगों पर पूर्ण प्रयत्न भी क्यों न किया जाये परन्तु लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पायेगी। इसलिए योग साधक का प्रयत्न सफलता को देने वाला नहीं बन पा रहा है। योग साधक को यह विचार करके प्रयत्न करना चाहिए कि जिस रीति या पद्धति से प्रयत्न करने से लक्ष्य पूर्ण होता हो उसी रीति या पद्धति को अपनाना चाहिए।

मनुष्य की दृष्टि सांसारिक अनेक पदार्थों को प्राप्त करने की है। इसलिए वह उन पदार्थों को प्राप्त करने की चेष्टा में ईश्वर को भुला देता है। इस कारण उसे जीवन भर संसार के अलग-अलग पदार्थों को पाने के लिए उसका प्रयत्न खर्च (व्यय) हो रहा है। जिस कारण वह कभी भी **'प्राप्तं प्रापणीयम्'** की स्थिति को प्राप्त नहीं हो पाता है। क्योंकि संसार के सभी पदार्थ एक ही व्यक्ति को यदि प्राप्त भी हो जाये, तो भी वह तृप्त, प्रसन्न, निर्भीक, शान्त और स्वतन्त्र अनुभव नहीं कर सकता। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि संसार के पदार्थों में पूर्णता नहीं है अर्थात् जैसा सुख आत्मा को चाहिए वैसा सुख संसार के पदार्थों से कभी नहीं मिल सकता। इसके विपरीत यदि मनुष्य केवल एक ईश्वर को प्राप्त कर लेवें, तो एक ही ईश्वर से मनुष्य को जैसा सुख चाहिए वैसा ही मिलेगा। इसलिए आध्यात्मिक (योग साधक) व्यक्ति ईश्वर को प्राप्त करके यह कह उठता है कि 'जो पाना था सो पा लिया' अब संसार में पाने योग्य और कुछ भी नहीं है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

ऋषि मेला २०१४ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष ऋषि मेला ३१ अक्टूबर, १, २ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१४ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा :– कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**–७.५ × १५ फीट।

ध्यातव्य : –१. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर–उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना अनुमति के पूर्व में स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें।

वेदगोष्ठी का आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष पर २७वीं वेदगोष्ठी का आयोजन ऋषि मेले के साथ ही दीपावली के पश्चात् ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४, शुक्र, शनि, रविवार को किया गया है। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विषय 'भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद' रखा गया है। इससे पूर्व वर्ष में कुछ विचार ग्यारहवें समुल्लास के सम्बन्ध में विचार किया गया था। इस वर्ष की गोष्ठी में ऋषि दयानन्द के पश्चात् प्रचलित मत सम्प्रदायों के सिद्धान्त और उद्देश्यों पर विशेष चर्चा होगी। किन विशेष सम्प्रदायों को विचार के लिए लिया जायेगा, इसकी सूचना आगे के अङ्क में दी जा सकेगी।

श्रेष्ठ निबन्ध के लिए प्रथम ६१००, द्वितीय ४१००, तृतीय पुरस्कार ३१०० रुपये रखे गये हैं। गत वर्ष के श्रेष्ठ निबन्धों को आगामी ऋषि मेले के अवसर पर पुरस्कृत किया जायेगा।

- संयोजक

जैसे जल सांसारिक पदार्थों का शुद्धि का निदान है, वैसे विद्वान् लोग सुधार का निदान हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.१७

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

ईश्वर की आज्ञा:- आर्यसमाज के आरम्भिक काल के वार्षिकोत्सवों के विज्ञापन इन पंक्तियों के लेखक ने देखे हैं। प्राय: सब पर पं. लेखराम जी रचित यह पद्य विज्ञापन के ऊपर छपा होता था-

नगाड़ा धर्म का बजता है आये जिसका जी चाहे।
सदाकत वेद अकदस आज़माये जिसका जी चाहे।।

देश विभाजन के पश्चात् सन् १९४८ में पं. लेखराम स्मारक मण्डल के बड़े-बड़े विज्ञापन दीवारों पर चिपकाने व पोस्ट करने का कार्य विनीत को सौंपा गया। उसके ऊपर पं. लेखराम जी के चित्र के साथ छपी ये पंक्तियाँ आज भी इस सेवक के नयनों के सामने घूमती हैं। यह एक प्रवृत्ति थी, सोच थी- इसी का फल था कि शंका समाधान, शास्त्रार्थ के लिए आर्य लोग प्रतिपल तैयार रहते थे। इसी सोच का फल था कि स्वाध्याय की प्रवृत्ति आर्यों की पहचान थी। परोपकारी पाक्षिक ने प्रश्नोत्तर व शंका समाधान की लहर चलाकर आर्यसमाज को झकझोरने व जगाने में बहुत सफलता प्राप्त की है। गत बीस वर्षों की, परोपकारिणी सभा की यह सबसे बड़ी उपलब्धि है।

एक नया प्रश्न आर्य विद्वानों के सामने आया है। इस पर प्रतिक्रिया देने अथवा इस विषय में आर्यसमाज का सैद्धान्तिक दृष्टिकोण रखने की माँग हमसे भी की गई है। एक महात्मा जी ने डंके की चोट से यह कहा है कि ईश्वर आज्ञा नहीं देता। ईश्वर की आज्ञा के पालन की बात कहना, वह महात्मा वेद विरुद्ध, सिद्धान्त विरुद्ध घोषित कर रहे हैं। यह सुनकर सेवक चौंक पड़ा।

महात्मा जी का शंका करने व प्रश्न उठाने का तो अधिकार है परन्तु उनके मत को व्यवस्था नहीं माना जा सकता। हमारे लिये वेद का प्रमाण सर्वोपरि है। लगता है कि महात्मा जी ने वेद, ऋषिकृत ग्रन्थों, ऋषि-जीवन का गम्भीर अध्ययन नहीं किया। ऋषि की शिष्य परम्परा के दार्शनिक विद्वानों तथा शास्त्रार्थों का स्वाध्याय किया होता तो महात्मा जी अपना मत दूसरों पर थोपने की भूल न करते।

विद्वानों तथा जनसाधारण के विचारार्थ कुछ प्रमाण व तथ्य आगे दिये जाते हैं। लेखक का निज मत वही है जो आज तक आर्य विद्वान् व भजनोपदेशक प्रचारित करते आये हैं। गली-गली में आर्य यह भजन गाते सुनाते प्रचार किया करते थे-

मेरा उद्देश्य है यही आज्ञा को तेरी पालना।
कर कर कमाई धर्म की सेवी में तेरी डालना।।

स्वामी आत्मानन्द जी महाराज, वेदानन्द जी महाराज, पं. शान्तिप्रकाश जी, पूज्य देहलवी जी की कोटि के दार्शनिक विद्वानों ने इस गीत पर कभी आपत्ति नहीं की।

आर्याभिविनय में विनय की गई है, **'आपकी भक्ति और आज्ञापालन में नित्य तत्पर रहें।'**[१]

महर्षि वेद मन्त्र की व्याख्या करते हुए लिखते हैं, ''आपकी आज्ञा का प्रणय अर्थात् उत्तम न्याययुक्त नीतियों में प्रवृत्त होके 'तदश्याम' वीरों के चक्रवर्ती राज्य को प्राप्त हों।''[२] फिर आगे एक विनय में लिखा है- ''मैं, आप और आपकी आज्ञा से भिन्न पदार्थ में कभी प्रीति न करूँ।''[३]

ऋषिवर के इस सुधासिन्धु आर्याभिविनय से ऐसे और भी अनेक प्रमाण दिये जा सकते हैं परन्तु ऋषि जीवन के प्रमाण भी बहुत महत्त्व रखते हैं। महर्षि की उदयपुर यात्रा के समय की एक घटना- महाराणा सज्जनसिंह तथा ऋषि जी के संवाद पर पं. लेखराम जी से लेकर कुँवर सुखलाल जी तथा शास्त्रार्थ महारथी महाशय चिरञ्जीलाल जी प्रेम ने दिल खोल कर लिखा है। ऋषि के 'ईश्वर की आज्ञा के पालन' के उपदेश, आदेश पर प्रश्न चिह्न लगाने वाले महात्मा जी ऋषि जीवन को उठाकर ये शब्द पढ़ें, ''आप मुझे तुच्छ लोभ दिखाकर एक **सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करवाना चाहते हैं।**''[४]

पूज्य लक्ष्मण जी लिखित ऋषि जीवन में कविराजा श्यामलदास की कोटि के महापण्डित की रचना की ये पंक्तियाँ पढ़िये-

यतिवर झट उत्तर दियो, नृपति लाभ दिखाय।
प्रभु आज्ञा को नहि तजो, जग सम्पत्ति पाय।।[५]

उपदेश का अर्थ भी आदेश तथा प्रेरणा ही समझना चाहिये। परमात्मा उपदेश दें अथवा माता-पिता, गुरु, गुणी या ज्ञानी-भाव या प्रयोजन सुधार व उपकार ही होता है। **'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मागृध:'** यह वेदोपदेश है और परमात्मा का आदेश भी। 'मनुर्भव' क्या यह ईश्वर का आदेश नहीं? जिन महात्मा जी ने यह नया विचार दिया है उनका यह कथन है कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है। वह परमात्मा का उपदेश माने न माने इस लिये परमात्मा क्यों

आज्ञा देगा? यह एक विचित्र तर्क है। यह ठीक है कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है, वह चाहे तो करे, चाहे तो न करे और चाहे तो उलट करे इसलिये परमात्मा की आज्ञा के पालन करने का प्रश्न ही नहीं उठता।

हमारा नम्र निवेदन है कि जीव की कर्म करने की स्वतन्त्रता के कारण ही तो ईश्वरीय ज्ञान, ईश्वरीय प्रेरणा तथा ईश्वर की आज्ञा के पालन की आवश्यकता पड़ती है। आर्याभिविनय में आता है, ''क्योंकि सब पुरुषार्थ वही है कि परमात्मा, **उसकी आज्ञा और उसके रचे जगत्** का यथार्थ से निश्चय (ज्ञान) करना।''[६]

ऋषिवर के वेद व्याख्या ग्रन्थों के तथा जीवन चरित्र के इतने स्पष्ट प्रमाणों को झुठला कर जनता को भ्रमित करना तथा बुद्धिभेद पैदा करना किसी को शोभा नहीं देता। ऋषि के पत्र-व्यवहार में, सत्यार्थप्रकाश तथा महाराज के शास्त्रार्थों में ईश्वर की आज्ञा के पालन करने की बात बार-बार आती है। यदि जीव की कर्म करने की स्वतन्त्रता की दुहाई देकर ही महात्मा जी ईश्वर के आज्ञा देने को सिद्धान्त विरुद्ध घोषित करते हैं तो फिर परमात्मा को वेद का सद्ज्ञान देने की भी क्या आवश्यकता थी? फिर मन में भय, लज्जा व शङ्का उत्पन्न क्यों की जाती है? आर्याभिविनय में **आत्मा में परमात्मा की नित्य गूञ्जने वाली आवाज** या प्रेरणा की बात भी कही गई है। बार-बार पाप करने से यह आवाज सुनाई नहीं देती जैसे टेलीफोन स्वर्गवास (Dead) हो जाता है ऐसे ही आत्मा में ईश्वर की आवाज नहीं गूञ्जती।

अधिक प्रमाण और क्या दें। पूजनीय पं. लेखराम जी, स्वामी दर्शनानन्द जी, पं. चमूपति जी, पं. रामचन्द्र जी देहलवी तथा श्रद्धेय उपाध्याय जी आदि के साहित्य से भी बीसियों प्रमाण दिये जा सकते हैं। हठ छोड़कर मान्य महात्मा जी प्रभु की अमर वाणी वेद के प्रमाणों पर विचार कर, यह रट छोड़ दें तो इसी में कल्याण है।

एक बार किसी ने यह प्रचार आरम्भ कर दिया था कि ''प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो, पूर्ण हो, पूर्ण हो''- यह महर्षि ने नहीं कहा था। यह वाक्य सिद्धान्त विरुद्ध है। प्रभु की तो कोई इच्छा हो नहीं सकती। वह पूर्ण है। उसकी कोई आवश्यकता नहीं। उसकी क्या इच्छा हो सकती है? यह कहकर श्रीमान् जी ने वाह! वाह!! लूटनी चाही। तब भी हमने उत्तर में तत्कालीन पत्रों तथा प्रत्यक्षदर्शी लाला जीवनदास आदि के संस्मरणों के प्रमाण देते हुए यह लिखा था पूर्ण प्रभु की कोई आवश्यकता नहीं। वह अपने लिये कुछ इच्छा नहीं रखता। यह तो ठीक है परन्तु वह प्यारा प्रभु **जीवों का कल्याण चाहता है।** यह वेद का सिद्धान्त है या नहीं? सृष्टि रचना का प्रयोजन प्रभु की यही इच्छा है। ऋषि के अन्तिम वाक्य में इच्छा शब्द का प्रयोग इन्हीं अर्थों में लिया जावे। इसका इससे भिन्न आशय न लिया जावे। तब महाशय जी ने यह हठ छोड़ दिया। आशा है ईश्वर की आज्ञा के पालन को नकारने वाले महात्मा जी हमारी विनती भले ही न मानें वेद की, ऋषि की, वेदानन्द महाराज की, पूज्य देहलवी जी की सीख को ग्रहण कर वेदादेश को स्वीकार करेंगे।

हूरों का प्रमाण:- आर्यसमाज नई मण्डी मुज़फ्फरनगर से श्री आर.पी. शर्मा जी तथा समाज के एक स्वाध्याय प्रेमी युवक श्री राकेश जी ने चलभाष पर प्रश्न पूछा है कि इस्लामी वहिश्त में सत्तर-सत्तर हूरें प्रत्येक जन्नती को मिलेंगी, इसका उल्लेख कौनसी आयत में है। उनको मेरी खोजपूर्ण पुस्तक 'कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में' तथा कुरान में भी कहीं न मिला। निवेदन है कि कभी किसी ने प्रमाण माँगा ही नहीं सो आयत या तफ़सीरों में कहाँ इसकी चर्चा है, यह इस घड़ी कण्ठाग्र नहीं। आरम्भिक शिक्षा उर्दू फारसी में इस्लामी वातावरण में, मुसलमान अध्यापकों की छत्रछाया में हुई सो बहिश्त में हर मोमिन को सत्तर-सत्तर हूरें मिलेंगी यह हमारे लिए एक सामान्य ज्ञान की बात रही है। गालिब, जौक, इकबाल सब मुस्लिम कवियों ने वहिश्त व हूरों पर खुलकर लिखा है। हाँ! कोई तीन वर्ष पूर्व ही लेखक को यह सुनिश्चित ज्ञान हुआ कि बहिश्त में ७० नहीं ७२ हूरें मिलती हैं।

अब पूछा गया है तो इसका हदीसों व तफसीरों से प्रमाण खोज कर दे देंगे। अभी इतना ही उपयोगी व पर्याप्त रहेगा कि 'अल्लाम: इकबाल' पुस्तक में श्री अनवर शेख जी ने स्पष्ट लिखा है **''हर जन्नती को ७२ हूरें मिलेंगी।''**[७] यह पुस्तक एक मुसलमान डॉक्टर विद्वान् का शंका समाधान करते हुए एक साक्षात्कार में कही गई है। स्वामी दर्शनानन्द जी आदि आर्य विद्वानों के साहित्य में भी इसके प्रमाण मिलेंगे।

ध्यान देने योग्य दो तथ्य हैं। सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशन से पूर्व भी मुसलमान विचारकों, विशेष रूप से कवियों ने तो जन्नत के सामान, भोग सामग्री पर कई गम्भीर प्रश्न उठाये ही इनके पश्चात् ऋषि की समीक्षा के प्रभाव से कुरान के कई भाष्यकारों के चिन्तन में बहुत उथल-पुथल मची। हूर व गिलमान की परिभाषायें ही बदल गईं। मौलाना

सनाउल्ला, मुहम्मद अली साहब, चकड़ालवी जी तथा सर सैयद अहमद किसी एक का मत दूसरे से नहीं मिलता।

परम्परावादी मुस्लिम विचारक, कवि और साहित्यकार तो हूर के बिना बहिश्त की बात ही नहीं करता। सबके दिल और दिमाग में हूरें ही हूरें छाई हैं। इसका उदाहरण डॉ. इकबाल की निम्न पंक्तियाँ हैं:-

इल्म में भी सरूर है लेकिन,
यह वोह जन्नत है जिसमें हूर नहीं।

अर्थात् ज्ञान का भी अपना आनन्द होता है परन्तु ज्ञान एक ऐसा बहिश्त है जिसमें हूरें नहीं होती अर्थात् डॉ. इकबाल को हूर विहीन बहिश (ज्ञान) नहीं भाता।

जन्नत की समीक्षा करने वाले इस्लामी विचारकों में मौलाना न्याज़ फ़तहपुरी के विचार अत्यन्त मौलिक व क्रान्तिकारी हैं। इस लेखक ने उन्हें भी उद्धृत किया है। उन पर आर्य विचारकों की गहरी छाप है। जन्नत पर उनके एक अद्भुत लेख का कभी समय मिला तो शब्दशः अनुवाद कर दिया जावेगा। मुज़फ्फरनगर वालों ने प्रश्न पूछा तो तुलनात्मक अध्ययन करने में रुचि रखने वालों के लिये दिशा निर्देश की दृष्टि से ये बातें लिख दी हैं।

यह कोई गौरव की बात नहीं है:- एक शंकराचार्य ने आर्यसमाज के सिद्धान्तों के खण्डन तथा पाषाण पूजा के मण्डन का पूरे दलबल से प्रचार अभियान छेड़ा। वह जालन्धर इसी उद्देश्य से पहुँचा। महात्मा मुंशीराम जी के कारण जालन्धर तब आर्यसमाज का गढ़ माना जाता था। आर्यों ने ब्र. नित्यानन्द जी तथा पं. लेखराम जी को बुलवाकर उनके व्याख्यान रखवाये। शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। किसी को सामने आने का साहस न हुआ। पौराणिकों के पास जाकर साहसी आर्यों ने शास्त्रार्थ की चुनौती दे दी। फिर भी कोई उत्तर न मिला। स्वामी नित्यानन्द जी के पाण्डित्य की धूम मच गई। पं. लेखराम जी ने विश्व इतिहास के प्रमाणों की झड़ी सी लगाकर मूर्त्तिपूजा पर अत्यन्त विचारोत्तेजक भाषण दिये। तब जालन्धर में सुपठित वर्ग की यह प्रतिक्रिया थी कि पं. लेखराम देश के सर्वोच्च इतिहासकारों में से एक हैं। इतिहास ग्रन्थों व इतिहासकारों के नाम सुन-सुनकर श्रोता दंग रह गये। पण्डित जी की प्रतिष्ठा तथा आर्यसमाज की शान को चार चाँद लग गये।

लेखक ने मेहता जैमिनि भूमण्डल प्रचारक के व्याख्यानों की ऐसी ही धूम मची देखी। एक-एक व्याख्यान में ४०-५० लेखकों व ग्रन्थों के अवतरण सुना देते थे। आर्यसमाज के वर्तमान वक्ता तथा नये-नये युवक उनकी शैली अपनाने में हीनता अनुभव करते हैं। अपने विद्वानों का तर्क प्रमाण देते हुए शर्माते हैं परन्तु जर्मन अंग्रेज लेखकों के नामों की चर्चा करने में शान समझते हैं। यही तो हीन भावना है।

गत दिनों कहीं पर कुछ लोगों ने एक अन्य मतावलम्बी से कहीं बातचीत करते हुए एक प्रश्न पूछा। तर्क मौलिक था। यह तर्क कई बार परोपकारी में दिया गया है। कई पुस्तकों में दिया है। हम सदा यह कहकर इसे देते हैं कि यह पं. चमूपति जी का चिन्तन है। इसका ऐसा प्रभाव पड़ा कि एक मौलाना ने इसे पढ़कर जीव व प्रकृति के अनादि होने पर अपने एक लम्बे लेख में यह लिखा है कि यदि जीव व प्रकृति को अनादि अजन्मा न मानें तो कुरान वर्णित अल्लाह के सब ९९ नाम निरर्थक हैं। अल्लाह न्यायकारी, दयालु, पालक व मालिक तभी है जब जीव व प्रकृति भी अनादि माने जायें। कारण खुदा अनादि काल से न्यायकारी व दयावान है। जीव व प्रकृति भी अनादि थे तभी तो वह उनको न्याय देता, दया करता, पालन करता उनको अन्न धन देता था। उस मौलाना का नाम भी लेते हुए हमें गौरव होता है। एक मुसलमान वकील पं. चमूपति जी के विचार पढ़कर दृढ़ आर्य बन गया। कृतज्ञता का प्रकाश न करना दोष है, पाप है, तस्करी है। इससे बचना चाहिये।

एक पूरक जानकारी:- परोपकारिणी सभा ने ऋषि के शास्त्रार्थों में कोलकाता शास्त्रार्थ भी छपवाया है। उसके अन्त में 'एक सामान्य निष्कर्ष' शीर्षक से कुछ पृष्ट दिये हैं। यह निष्कर्ष लाला साईंदास लिखित है। इसमें एक महत्त्वपूर्ण वाक्य यह लिखा मिलता है, ''करुणासागर की करुणा, कष्ट के पश्चात् अवश्य बरसती है। बिगाड़ के पश्चात् सुधार भी होता है। शुद्ध-पवित्र पालक प्रभु ने तेरे बुढ़ापे पर- निर्बलता पर दया करके तेरे प्राचीन वैभव व कीर्ति की पुनः स्थापना के लिए **तेरी सन्तान में से एक योगी महर्षि जन उत्पन्न कर दिया है।**''

यह शास्त्रार्थ २२ जनवरी सन् १८८१ में हुआ। आर्यसमाज के उत्तर के साथ यह निष्कर्ष उसी वर्ष छप गया। इसमें 'योगी महर्षि' विशेषण ऋषि के लिये प्रयुक्त किया गया। मिर्ज़ाई लोगों ने एक विषैली गप्प गढ़कर एक पोथी (परोपकारिणी सभा में सुरक्षित है) में यह प्रचारित किया कि मास्टर आत्माराम जी ने पं. लेखराम रचित जीवन में स्वामी जी को ऋषि की उपाधि दी। पण्डित जी के ग्रन्थ के प्रकाशन के १८-१९ वर्ष पूर्व लाला साईंदास

जी ने जन भावना को योगी महर्षि लिखकर व्यक्त किया। ज्ञानीदित्तसिंह ने निन्दा करते हुए लिखा है कि हिन्दू स्वामी दयानन्द को महर्षि मानते हैं। लक्ष्मण जी के ग्रन्थ में पाद टिप्पणियों में लेखक ने मिर्ज़ाई गप्प के प्रतिवाद में और भी अनेक प्रमाण दिये हैं। विचारशील पाठक ऐसे सब प्रमाण कण्ठाग्र करें तो बड़ा लाभ होगा। ये सब प्रमाण आगे भी काम आयेंगे।

७२ हूरों का प्रमाण मिल गया:- 'तड़प-झड़प' लिखते-लिखते साथ-साथ कुछ खोज भी चलती रही। ७२ हूरों की बहिश्त में प्राप्ति के प्रमाण भी मिल गये। मश्कात शरीफ़ जिल्द तीसरी पृष्ठ ८३-९७ तक तथा जामा तर्मजी जिल्द दूसरी पृष्ठ १३८ पर सविस्तार यह प्रकरण मिलता है। आगे कभी एक इस्लामी साहित्य के मर्मज्ञ मुसलमान बन्धु के एतद्विषयक कथन कभी दिये जायेंगे।

तर्क संग्रह:- पुराने आर्य विद्वानों के मौलिक चिन्तन की सुरक्षा की परियोजना पर कार्य होना चाहिये। तर्क संग्रह नाम से एक सुन्दर पुस्तक छपनी चाहिये यथा श्री पं. लेखराम जी शैतान के अस्तित्व तथा उसके द्वारा पाप करवाने पर लिखते हैं कि शैतान तो कुछ लोगों के लिये पाचन वटी है। दुष्कर्म करके शैतान पर पाप थोप कर अपनी निर्दोषता सिद्ध करना पाचन वटी का प्रयोग ही तो है।

एक मुस्लिम कवि का कथन भी यही प्रमाणित करता है-

ख़ूब हंसी आती है मुझे हज़रते इनसान पर।
फ़ेले बद (पाप कर्म) तो ख़ुद करे लानत करे शैतान पर।

अवतारवाद फ़िलास्फ़ी:- अवतारवाद के महारोग की रोकथाम के लिए उत्तम साहित्य का सृजन होना चाहिये। लोग इसके लिए नये-नये कुतर्क गढ़ते रहते हैं। प्रश्न यह है कि भगवान् तो पूर्ण है फिर उसमें क्या कमी थी जो उसमें यह परिवर्तन हो गया और उसने अवतार ले लिया। यदि बाह्य प्रभाव से परिवर्तन हो गया तो भगवान् निर्बल सिद्ध हो गया। ईश्वर सर्वशक्तिमान् है तो बाहरी प्रभाव से परिवर्तन का प्रश्न ही नहीं उठ सकता। मुर्दों तथा मनुष्यों की पूजा का रोग बढ़ता ही जा रहा है। ऐसा लगता है कि भारत में भक्तों की मन्नतें (कामनायें) पूरी करने का लाईसैन्स भगवान् ने कबरों में पड़े खाजों, पीरों व फकीरों को दे रखा है। भगवान् खाली बैठा मक्खियाँ ही मारता होगा।

शैतान आयतें लाता रहा:- कुरान के इलहाम होने की एक युक्ति यह दी जाती रही है कि जो लोग ऐसा नहीं मानते वे कुरान जैसी कोई आयत बनावें या लावें। एक आयत में ऐसा कहा गया है। सर सैयद इस आयत के इन अर्थों को नहीं मानते। ईसाइयों ने तथा पं. लेखराम जी ने मुसलमानों के इस तर्क का प्रतिवाद करते हुए लिखा है कि कई आयतें इस कारण से रसूल ने निरस्त कर दीं कि बाद में पता चला कि वे आयतें शैतान लाया था। रसूल ने उन्हें इलहाम समझ लिया और फिर भूल का सुधार कर लिया। मौलाना सनाउल्ला जी ने रसूल द्वारा भूल सुधार की बहुत प्रशंसा की है। इससे यह तो सिद्ध हो गया कि शैतान भी अल्लाह जैसी आयतें बनाने में समर्थ व योग्य है। ऐसी स्थिति में ऐसी आयत बनाओ-लाओ या दिखाओ का कुछ अर्थ नहीं रहता। इस्लाम के प्रचार के लिए नई-नई शैली में लिखी जा रही पुस्तकों के निराकरण के लिए सोच-समझकर रोचक सरल साहित्य का प्रसार-प्रचार आवश्यक है।

टिप्पणियाँ

१-२. द्रष्टव्य आर्याभिविनय मन्त्र संख्या ३९ तथा ४५।

३. द्रष्टव्य आर्याभिविनय का द्वितीय प्रकाश मन्त्र पहला।

४. द्रष्टव्य महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्पूर्ण जीवन चरित्र भाग दो, पृष्ठ ५९०।

५. द्रष्टव्य वही पृष्ठ ६००।

६. द्रष्टव्य आर्याभिविनय द्वितीय प्रकाश मन्त्र ४२।

७. द्रष्टव्य 'अल्लाम: इकबाल: मन्फ़ी पहलू' पृष्ठ १३।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १२ से १९ अक्टूबर, २०१४

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१२ से १९ अक्टूबर, २०१४- **योग-साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर),**
सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

ऋषि मेला - ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

।। ओ३म् ।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

ज्योतिष्टोम अग्निष्टोमाख्यस्य सोमयागस्य निरूपणम्

- सनत्कुमारः

महर्षि दयानन्द ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में यज्ञ की परिभाषा करते हुये कहा है ''अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त वा जो शिल्पव्यवहार और पदार्थ विज्ञान है, जो कि जगत् के उपकार के लिये किया जाता है। उसको यज्ञ कहते हैं।'' महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट यज्ञ की इसी परिभाषा को आधार बनाकर के शतपथ आदि ब्राह्मण, श्रौतसूत्र एवं अथर्ववेद में अग्निहोत्र से आरम्भ करके अश्वमेध पर्यन्त इन २३ यज्ञों के नाम और उनमें मुख्य प्रकृतियाग अग्निष्टोम नामक सोमयाग का विज्ञान (एवं यज्ञ का आधिदैविक, आध्यात्मिक और आधिभौतिक स्वरूप, यज्ञ का अधिकारी, यज्ञ में प्रयुक्त द्रव्य, ऋत्विक्-संख्या, यज्ञ का फल, वेदों में यज्ञों की महिमा, यज्ञ के विभाग, यज्ञ एवं होम में अन्तर के साथ-साथ विधि) का प्रक्रिया सहित वर्णन किया गया है।

पिछले अंक का शेष भाग.....

२३. मनोर्यज्ञऽइत्यु वाऽआहुः। (श. १-५, १, ७)

२४. यज्ञाद्वै प्रजाः प्रजायन्ते। (श. ४.४.२, ९)

२५. यज्ञो यज्ञस्य प्रायश्चित्तिः (ऐ. ७/४)

२६. व्यृद्धं वै तद् यज्ञस्य यन्मानुषम्। (श. १-४/१/३५)

२७. इतः प्रदाना वै वृष्टिरितो ह्यग्निर्वृष्टिं वनुते स (अग्निः) एतैः (घृत-) स्तोकैरेतान्त्स्तोकान् वनुते तऽएते स्तोका वर्षन्ति। (श. ३-८/२-२२)

२८. यज्ञेन वै देवा दिवमुपोदक्रामन्। (श. १/७/३/१)

२९. स्वर्गो वै लोको यज्ञः। (कौ. १४/१)

३०. यज्ञेन वै तद्देवा यज्ञमयजन्त यदग्निनाऽग्निमयजन्त ते स्वर्गं लोकमायन्। (ऐ. १.१६)

।। यज्ञस्य प्रयोजनलाभौ।।

वेदभगवानुवाच- यत्कामकामयमाना इदं कृण्मसि ते हविः।

तन्न सर्वं समृध्यतामधैतस्य हविषो वीहि स्वाहा।।

(अथर्व. १९.५२-५)

* यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।

इदं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः।।

अथर्व. २९.५८-५

* अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे, स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्रयच्छतु। (अथर्व. १९-६४-१)

* ईजानं देवावश्विनावभिः सुम्नैरर्घताम्।

(ऋ. १०- १३२-१)

* अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः। (ऋ. १-१६४-३५)

* यज्ञ इन्द्रमवर्धयत्। (अथर्व. २०-२०-५)

* अपामतिं दुर्मतिं, प्राणो यज्ञेन कल्पतामं। अपानो यज्ञेन कल्पताम्। व्यानो यज्ञेन कल्पताम्। उदानो यज्ञेन कल्पताम्। समानो यज्ञेन कल्पताम्। चक्षुर्यज्ञेन कल्पताम्। श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताम्। वाग्यज्ञेन कल्पताम्। मनो यज्ञेन कल्पताम्। आत्मा यज्ञेन कल्पताम्। ब्रह्मा यज्ञेन कल्पताम्। .....यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। (यजु. २२-३३)

* उत् तिष्ठ ब्रह्मणस्ते देवान् यज्ञेन बोधय। आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यजमानं च वर्धय।। (अथर्व. १९-६३-१)

* यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्। (ऋ. १०-१२१-१०)

इत्यादि मन्त्रेषु भगवान् यज्ञ प्रयोजनमुवाच।।

अन्यत्रापि- यज्ञाद् भवति पर्जन्यः पर्जन्यादन्न सम्भवः।

(गीता)

* अग्नौ प्रस्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः।। (मनु. ३-७६)

* भेषज्ययज्ञा वा एते यच्चातुर्मास्यानि तस्मादृतुसन्धिषु प्रयुज्यन्ते। ऋतुसन्धिषु हि व्याधिर्जायते। (कौ. ब्रा. ५/१)

अपि च- अर्थं वाचः पुष्पफलमाह याज्ञे दैवते पुष्पफले देवताध्यात्मे वा। (निरु. १-४)

इत्यादिभ्य एतेभ्यस्स्थलेभ्यो ज्ञायते यदयमेव यज्ञः समृद्धिं मेधां श्रद्धां सुखं निरोगतां च ददाति। अयमेव सुमते र्दाता। अयमेव वृष्टिं कारयत्ति। रोगान् नाशयतिं। अयमेव यातुधानानां हन्ता। अयमेव ज्ञापको देवताज्ञानस्य तेन देवताज्ञानेनैवाध्यात्मस्य ज्ञानं खलु। अयमेव चर्कति बर्भति जर्हति च जगत्। देवा अस्यैव वन्दिनः, अयमेवान्नं देवानां, ब्रहमनिष्ठा ब्राह्मणा एनमेवाहरहरुपतिष्ठन्ते। इति संक्षेपेण यज्ञप्रयोजनमुक्तम्।

''सोमयागस्य फलविज्ञानरूपेण निरूपणं कृत्वानन्तरं प्रक्रियारूपेण निरूपणं क्रियते''

अर्थात्- सर्वसोमयागप्रकृतिभूतस्याग्निष्टोमाख्यस्यै-काहस्य सर्वसोमयागेभ्यः पूर्वमनुष्ठेयस्यानुष्ठानप्रकारः संक्षेपतो

निरूप्यते।

सोमयागकृतनिश्चययजमानः प्रथमं सोमप्रवाक्[१] वृणुयात्। वृत्तो हि सोमप्रवागध्वर्य्वादीनां गृहं गत्वा तान् प्रति वदेत् यदमुकशर्मणः सोमयागो भविता, तत्र भवता आर्त्विज्यं कर्त्तव्यम्। आर्त्विज्यं चिकीर्षन् आधानादिषु के क ऋत्विजोऽभवन् ते च कथं नार्त्विज्यं कुवन्ति? अपि यजमानेन कल्याण्यो दक्षिणाः कति दीयन्ते? इति पृष्टे समुचितमुत्तरं प्राप्य स्वीकृत्य आर्त्विज्यकरणं यथाकाले यजमानं गृहमागच्छेत्। आगतेषु तान् प्रथमदिनकृत्यम् अध्वर्युं त्वां वृणे'' इत्यादिवचनै मधुपर्कदानेन वृणीते। अत्र ''षोडश ऋत्विजो वृणीते'' (का.श्रौ.सू. ७-१-१) इति वचनेन ते षोडश भवन्ति।।

वरणप्रकारतः पूर्वं वरणस्य परिभाषा क्रियते। कर्मण्यप्रवृत्तस्यप्रवृत्तकरणम् एव वरणं खलु तत्तु द्विविधं- दैवर्त्विग्वरणम्, मानुषर्त्विग्वरणम्।

१. दैवर्त्विग्वरणम्- सृष्टियागे देवा किं किं कुर्वन्ति तद् ज्ञापनायैव खलु भवन्ति दैवर्त्विग्वरणम्। तद्यथा- यजमान ब्रवीति-अग्निर्मे होता, आदित्यो मेऽध्वर्युः, चन्द्रमा मे ब्रह्मा, पर्यन्यो म उदगाता, आपो मे होत्रासंशिनः, रश्मयो मे चमसाध्वर्यवः। इति।

२. मानुषर्त्विग्वरणम्- तत्र ब्रह्मादीन् षोडश ऋत्विजः प्राङ्मुरवानुपवेश्य स्वयमुदङ्मुखः सन् देवानामृत्विजो वृणीतेति-उच्चार्य- अमुकगोत्रामुकशर्मन् अग्निष्टोमसंस्थेन ज्योतिष्टोमेनाहं यक्ष्ये। तत्र मे त्वं ब्रह्मा भव। इत्यादिः ततः प्रवृत्तेभ्यो ऋत्विग्भ्यः मधुपर्कदानम्। एतावत् कृत्यं गृहे सम्पाद्य, गार्हपत्याग्निमरण्योः समारोप्य तमग्निं शमयित्वा अरणी यज्ञसामग्रीश्च गृहीत्वा सोमेन यत्र यक्षन् स्यात् तत्र सपत्नीको गत्वा, तत्र अरणी मथित्वा, गार्हपत्यायतने मन्थनोत्पन्नमग्निं प्रतिष्ठापयेत्।

ततोऽध्वर्युराहवनीयं प्रणीय, तत्र सम्भारयजुस्संज्ञकान् चतुर्विंशतिसङ्ख्याकान् होमान् हुत्वा, तमग्निं विसृज्य, पुनःर्गाहपत्यात् प्रणीय, सप्तहोतृसंज्ञकं होमं कृत्वा, तमप्युत्सृज्य, पुनः तत एव आहववनीयदक्षिणाग्नी विहृत्य तत्र दीक्षणीयेष्टिं कुर्यात्।। तत्रापि इष्टेः पूर्वमप्सुदीक्षा भवत्येव। तद्यथा-

आसुदीक्षा- तत्र प्राग्वंशशालाया उत्तरदिशि- उदकपूर्णस्यैकस्य कुम्भस्य स्थापनम्। तत्र यजमानं पूर्वाभिमुखमुपवेश्याग्रे नखछेदनं विधेयम्। तदनन्तरं केशश्मश्रवादीनां वपनम्। तदनन्तरं तडागादिषु स्नानं विधेयम्। ततः उभावपि स्वाङ्गानि नवनीतेनानुलिम्पतः। अञ्जाते च स्वेऽञ्जनेनाक्षिणी।

दीक्षणीयेष्टिः- उक्तञ्चैतरेयब्राह्मणे- ''आग्नावैष्णवं पुरोडाशं निर्वपन्ति दीक्षणीयमेकादशकपालम्।'' (ऐ. १-१) एवेष्टिः पत्नीसंयाजपर्यन्तमेव क्रियते। अत्राध्वर्युर्दीक्षाहुतिः (औद्ग्रभणः) षट् हुत्वा यजमानाय कृष्णाजिनद्वयं दद्यात्। स तत् परिगृह्य, आहवनीयसमीपं गत्वा भूमौ तदास्तीर्य तदुपर्युपविश्य, मेखलां मुञ्जतृणनिर्मितामध्वर्युदन्तां कट्यां बद्ध्वा, कृष्णमृगस्य शृङ्गं शरीरकण्डूयनार्थम्, उदुम्बर वृक्षीयं स्वसमपरिमाणमूर्ध्वतायां दण्डं च यजमानो गृहीत्वा धारयन्नासीत।

एवं यजमानपत्न्याः शिरसि इषीका निर्मितं जालं, कट्यां मुञ्जनिर्मितं योक्त्रं च बध्नीयात्। ततो यजमानो मुष्टिबन्धनं कुर्यात्। मुष्टिकरणानन्तरम् अध्वर्युर्यजमानं दीक्षितं देवेभ्यो मनुष्येभ्यश्चावेदयेत्- ''अदीक्षिष्ट अयं ब्राह्मणोऽमुकशर्मा अमुकस्य पुत्र'' इत्यादि। अत्र पितृपितामहप्रपितामहानां मातृपितामहीप्रपितामहीनां च नामानि वक्तव्यानि। एवं त्रिरूपांशु त्रिरुच्चैश्चावेदनेऽध्वर्युणा च कृते यजमानो वाङ्नियमनं कृत्वा रात्रौ नक्षत्रोदयपर्यन्तं तथैवासीत।

नक्षत्रोदयानन्तरं ''व्रतं कृणुत'' इति प्रेषेण वाचं विसृजनध्वर्युणा पयसि दत्ते तत् पिबेत्। पत्न्यपि चैवं कुर्यात्। एवमेव प्रतिदिनमहनि रात्रौ च पय एव पिबेतां यजमानः पत्नी च। एतावता प्रथमदिनकृत्यं समाप्यते। यजमानस्तस्यां रात्रौ जागरणं कुर्यात्।

यजमानस्य नियमा लिख्यन्ते- न लौकिकीं वाचं वदेत्। न सन्ध्ययोः प्राणवंशाद्बहिर्गच्छेत्, नोच्चैर्हसेत्। नानृतं वदेत्। दीक्षाव्यञ्जकानि कृष्णाजिनादीनि सर्वदा धारयेत्। इत्यादयः।

प्रायणीयेष्टिः - 'द्वितीयदिनकृत्यम्'

प्रयन्ति स्वर्गमनया सा प्रायणीया। अत्र पञ्चदेवताः सन्ति। पथ्यास्वस्तिः, अग्निः, सोमः, सविता, अदितिः।''अत्रादित्यं चरुं प्रायणीयं निर्वपति'' (श. ३-२-२-१)

अनेन वचनेनादित्ये चरुः अन्याभ्य आज्यमेव द्रव्यम्।

आह्वनीयेऽग्नौ तमोदनं पक्त्वा आह्वनीय एव पूर्वादिषु चतसृष्वपि दिक्षु पथ्यादिभ्यः क्रमेणाज्यं हुत्वा मध्येऽदित्य ओदनं जुहुयात्।

विशेषः- यस्मिन्नोदनः पक्वः तत्पात्रमप्रक्षाल्यैव क्वचित् स्थापयेत्। तथैव उदनीयेष्टि हविः पाकार्थं तदुपयुञ्जीत।

सोमक्रयः केनचन कौत्सगोत्रेण ब्राह्मणेन शूद्रेण वा सोममानाय्य ततस्तं क्रीणीयात्। सोमक्रयणं दशभिः

द्रव्यैर्भवति।

१. गौरेकाहयनी २. हिरण्यम् ३. अजा ४. धेनुसवत्सा ५. सवत्साधेनु ६. ऋषभः ७. अनड्वान् शकटवाही ८. वत्सतरः ९. वत्सतरी १०. वासः

क्रीतं तमध्वर्युः शकटे निधायानडुदभ्यामूढं शकटं शालायामानाय्यासान्द्यां सोमं निधाय तत्र स्थापयेत्।

आतिथ्येष्टिः - ''शिरो वै यज्ञस्यातिथ्यमिति'' श्रुत्या आतिथ्येष्टिः सोमयागस्य शिरोरूपत्वम्। अपि च-शतपथे-

''अथ यस्मादातिथ्यनाम अतिथिर्वा एष एतस्या गच्छति यस्सोमः''

''आत्तिथ्यं निर्वपति वैष्णवं नवकपालमिति'' विष्णुदेवता, नवकपालो पुरोडाशो द्रव्यम्।

तानूनप्त्रविधिः- आतिथ्येष्टिं परिसमाप्याध्वर्युप्रभृति षोडशर्त्विजो यजमानश्च समनस्का यज्ञकार्यं सम्पादयेयुः। एतदर्थं घृतस्पर्शपूर्वकं समन्त्रकं यत् शपथग्रहणं तदेव तानूनप्त्रं कर्म।।

तदनन्तरं प्रवर्ग्यानुष्ठानम्- (अस्मात् पूर्वमवान्तर दीक्षा, सोमाप्यायनं निहनवः सुब्रहमण्याहवानमपि कर्त्तव्यम्)

अनुष्ठानात् पूर्वं सम्भारभरणं कर्त्तव्यं महावीराख्यपात्रनिर्माणञ्च। एवं सम्भारान् संभृत्य स्वकाले प्रवर्ग्यं कर्तव्यम्। विशेषस्तु- महावीरपात्रे तप्ते घृते पयः प्रक्षेपणं प्रवृञ्जनमिव्युच्यते। अत एव तत्सम्बन्धात् कर्मणोऽस्य प्रवर्ग्य इति नाम सम्पन्नम्। महावीरपात्रस्थं पयोमित्रितं घृतं ''धर्मः इत्यपि संज्ञकं भवति। धर्मस्य अश्विनौ इन्द्रश्च देवते। अध्वर्युः आश्रावणप्रत्याश्रावणादि कृत्वा महावीरस्थं पयोमिश्रितं घृतमाहवनीये जुहुयात्। तत्पश्चात् षट् शकलहोमान् कृत्वा अग्निहोत्रं हुत्वा, होतृ ब्रह्मआग्नीध्रयजमानैस्सह शेषभक्षणं कुर्यात्। ततो महावीरादीनां प्रवर्ग्यसंभाराणां सम्राडासन्द्यां स्थापनम्। अयं प्रातः प्रवर्ग्यः। एवमेव सायम्।

उपसदिष्टिः - तत उपसदिष्टः तत्राज्यं द्रव्यं, अग्निः, सोमो विष्णुश्च देवता स्रुवेण प्रातरूपसद्धोमः, इत्थं सायं, प्रायेणोपांशुयाजवत् प्रयोगः। प्रधानाहुत्यनन्तरं प्रथमोपसद्धोमः। सु ब्रह्मव्याह्वानं कृत्वा विराम। ततो सायंकालीने प्रवर्ग्योपसदौ सुब्रह्मव्याह्वानं च। एवं द्वितीयतृतीयचतुर्थदिवसेषु सायंप्रातरनुष्ठेयम्। तेनाग्निष्टोमे षड्वारं प्रवर्ग्योपसदोरनुष्ठानं सिध्यति।

तृतीयदिनकृत्यम्- प्रातः प्रवर्ग्योपसदावनुष्ठाय (सुब्रह्मव्याह्वानं) महावेदेः निर्माणं कर्त्तव्यम्। सा च प्राचीनवंशमण्डपात् पुरतः षट्पदानि परित्यज्य ततो निर्मातव्या। प्राक्पश्चात् द्विसप्तति पदायामा दक्षिणोत्तरतः षष्टिपदायामा विस्तारा च भवति। श्रोणिभागेऽशभागे च अष्टाचत्वारिंशद् इति। एवं समग्रां वेदिं निर्माय प्रातः ततो यजमानस्य पयःपानं सायं सायाह्निकीभ्यां प्रवर्ग्योपसद्भ्यां प्रचर्य सुब्रह्मण्यमाहूय व्रतं कृत्वा विरमेत्।

चतुर्थदिनकृत्यम्- चतुर्थे दिने द्वाभ्यां प्रवर्ग्योपसद्भ्यां प्रचर्य प्रवर्ग्यमुद्वास्योत्तरंवेद्यां प्रवर्ग्यपात्राणि प्रक्षिप्य, अग्नीषोमीयस्य तन्त्रमारभेत। आह्वनीये काष्ठान्याधाय ज्वलन्ति तान्यादाय आसन्दीस्थं सोममपि सहैवादाय महावेद्यन्तर्गतायामुत्तरवेद्यां तमग्निं प्रणयेत्। ततः प्रभृति यज्ञसमाप्तिं यावदस्यैव आह्वनीयेति व्यवहारः। यतः स प्रणीतः स गार्हपत्य इतः परं भवति। यो गार्हपत्यः स इतः परंप्राजहितसंज्ञकः।

आनीतं सोमं दक्षिणहविर्धानमण्डपस्य हविर्धानशकटे स्थापयेत्। एवमग्निं प्रणीय चात्वालस्थान् पांशूनादाय तैः धृष्ण्यानावपेत्। ततोऽग्निषोमीयस्य तन्त्रस्यानुष्ठाने सति सुब्रह्मण्येन सुब्रह्मण्याह्वानकृते सोमाभिषवाया-भिसुतरसवर्धनाय च तड़ागादितो वसतीवरीनामकं जलं घटे संस्थाप्याध्वर्युः तं घटं शालामुखीयमपरेण संस्थापयेत्। ततो पुरोडाशादियागं समापयेत्। रात्रावध्वर्युः वसतीवरीसंज्ञकं पूर्णं घटमादाय वेदीं परितो यथाविधि हरन् पुनस्तत्रैव निक्षिपेत्। तदाप्रतिप्रस्थाता वत्सापाकरणादि दर्शवत् कृत्वा दध्यातञ्च्यात्। रात्रौ यजमानपत्न्याश्च जागरणम्, इति चतुर्थदिनकृत्यम्।

प्रातस्सवनम्- पञ्चमदिनकृत्यम् (सुत्यादिनम्)- अयमेव दिवसः सुत्यादिवस इत्युच्यते। सोमाभिषवणं ग्रहग्रहणं तद्धोमादीनामनुष्ठानमस्मिन्नेव दिने भवति। चतुर्थदिनस्य रात्रावपश्भागे सर्व ऋत्विजः प्रबुध्य स्नात्वा सोमाभिषवसम्बन्धीनि कर्माण्यारभेरन्। ततोऽध्वर्युः ग्रह-चमसादीनि पात्राणि तत्तत्स्थानेषु योजयेदध्वर्युः। होता पक्षिणां जागरणाद् पूर्वमेव प्रातरनुवाकाख्यं शस्त्रं पठति। प्रतिप्रस्थाता च सवनीय हविषां निर्वापः करोति। धानाः, करम्भः, परिवापः, पुरोडाशः पयस्था पञ्च हवींष्यत्र भवन्ति।[२] तेषाम् इन्द्रो हरिवान्, इन्द्रः पूषण्वान्, सरस्वती भारती, इन्द्रः, मित्रावरुणौ इति क्रमेण देवताः।

एवं पुरोडाशादीन् निर्वापान् पयस्यांश्च प्रातरनुवाकशस्त्रकालमेवाग्नीत् यथावत् सम्पाद्य उन्नेता एन्द्रवायवादीनि पात्राणि योजयति। एवं यथावत् पात्रेषु योजितेषु चत्वार ऋत्विजः सोमाभिषवाथेऽधिषवणफलकयो सर्वत उपविशेयुः। एते मितं सोमं चतुर्धा विभज्य चत्वारोऽपि तत्र

प्रहरेयुः। यावता रस प्रच्युत्तिर्भवेत् तावत् पर्यन्तं निग्राभ्यामभिषुणूयुः।।

विशेषः- इतोऽग्रे विस्तारभिया क्रियाणां व्याख्या न प्रस्तूयते। केवलं नामानि क्रमशः प्रदीयन्ते- १. ऐन्द्रावायवादिग्रहग्रहणम्। २. प्रसर्पणम्। ३. धाराग्रहप्रचारः। ४. शुक्रामन्थिग्रहप्रचारः। ५. चमसदेवताः।

चमसभक्षणम्, शस्त्रपाठप्रतिगरादि, नाराशंसहोमः, उक्थ्यग्रहप्रचारः

विशेष भक्षणान्ते सोमस्य, सवनसंस्थाहुतिं हुत्वारम्भकाले येन मार्गेण विहारं प्रविष्टास्तेनैव ऋत्विजो बहिर्निगच्छेयुः। एतावता प्रातस्सवनं समाप्तम्।

अथ माध्यन्दिनं सवनम्- तत्र भगवति भास्वति नमसो मध्यं गते विहारं प्रविश्य माध्यन्दिनसवनकर्म आरभेरन् सयजमाना ऋत्विजः। तत्र पूर्ववद् महाभिषवः। अत्र शुक्रः, मन्थी, आग्रयणः, उक्थ्यास्त्रयो मरुत्वतीयौ इत्येतावन्त एव ग्रहाः। ते च धाराया ग्राह्याः। पूर्ववत् परिसर्पणम्। पूर्ववदेव ग्रहप्रचारो भक्षणान्तः, पात्रामादनं च। तत्सम्बन्धिनामृत्विजां सवनीय हविषामपि भक्षणम्।

दक्षिणादानम्- उक्तञ्च अथ ये ब्राह्मणाः शुश्रुवांसोऽनूचानाः ते मनुष्य देवाः, तेषां द्विधा विभक्त एव यज्ञः, आहुतय एव देवानां दक्षिणा मनुष्यदेवानाम्।

या दक्षिणा सङ्कल्पकाले सङ्कल्पिता तां दद्यात्।

तत्पश्चाद् इन्द्रदेवताक मरुत्वतीय ग्रहप्रचारः कर्तव्यः। ततः सवनसमाप्तिं होमं कृत्वा सर्वर्त्विजो बहिर्निगच्छेयुः। तेन समाप्तं माध्यन्दिनसवनम्।

अथ तृतीय सवनम्-

माध्यन्दिनसवनसमाप्त्यनन्तरं किञ्चिद्विरम्य सवनमिदमारभेरन्। अत्र आर्भवपवमानाय प्रसर्पणम् चमसप्रचारश्च, सौम्यचरुः हारियोजनग्रहप्रचारश्च विशेषः। अन्यच्चात्र प्रायश्चित्तहोमान् हुत्वा सवनसमाप्तिहोमं कुर्यात्। ततो यजमानस्य विष्णुक्रमणादि। एतावता तृतीयसवनं समाप्तम्

अवभृथेष्टिः- तत्र यावन्ति सोम निमित्तानि पात्राणि तान्यादाय सपत्नीको यजमानः नद्यां गत्वा सर्वाणि पात्राणि तत्र क्षिपेत्। अस्मिन् कर्मणि गमनप्रारम्भेऽर्धमार्गे जलान्तिके च भवति सामगानम्। तत्र जल एवावभृथेष्टिं कुर्युः। द्वावनूयाजौ। वरुणः पुरोडाशदेवता।

उदनीयेष्टिः- ततो सयजमाना ऋत्विजः स्नात्वा उदनीयेष्टिं कुर्युः। सा प्रायणीयेष्टिवदेव किं च प्रायणीयार्थं यस्मिन् पात्रे चरुपक्व तदप्रक्षाल्यैव पूर्व स्थापितम्। तत्रैवोदनीयार्थं चरुं पचेत्।

उदवसानीयेष्टिः- गार्हपत्यमग्निमाख्यो समारोप्य, गृहमागत्य, अरणी मथित्वा, अग्नीन् विहृत्य तत्रोदवसानीयाख्यामिष्टिमष्टाकपालपुरोडाशद्रव्यकां कुर्यात्, तत्स्थाने विष्णुदेवताकामेकामाहुतिं वा कृत्वानन्तरं सायमग्निहोत्रं कुर्यात्। इति संक्षेपेण सोमयागनिरूपणम्

।। उपसंहारः ।।

तदयमत्र सारांशः- सृष्टौ या घटनाः सूक्ष्माः परोक्षा भवन्ति याश्च बभुवुः। आधिदैविक्य इत्यादयः तासां ज्ञानाय सुखप्राप्तये च यागकल्पना कृता। भारतदेशे याज्ञिकी प्रथा बहुकालतः प्रथिता प्रचलिता चासीत्। अग्नौहविः प्रक्षेपणमेव यागो देवपूजारूपो मुख्यकर्त्तव्यता परिगणित आसीत्। तेषु सोमयागः प्रधानतमं स्थानमलभत। तादृशयागाङ्गाभूतः सोमोलता विशेषः। नैकविधअतिशयिततमा अनेके गुणास्सन्ति सोमे। पर्वतप्रदेशेभ्य एव स आनीतव्य आसीत्।

वस्तुतस्तु सोमलतया सह भारतवर्षेतिहासस्य वर्त्तते महान् सम्बन्धः। यावत् सोमलतायाः प्राप्तिरासीत् तावत् सर्वत्र सोमयाग-वाजपेय-राजसूय-चयनाश्वमेधादीनां च प्रचलनमासीत्। तदा भारतस्य महती प्रतिष्ठा सर्वत्रासीत्। विज्ञाने शिल्पकलायां शल्यचिकित्सायाम् आध्यात्मिक तत्वविवेचने च महती ख्यातिरासीत्। अत एव अस्य देशस्य जगद्गुरुसंज्ञापि सञ्जाता। पुनरेषा संज्ञा स्यादिति भगवन्तं प्रार्थये।

अन्ते च यज्ञसारो भगवता कृष्णेन गीतायां निर्दिष्टः-

देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथः।।

टिप्पणियाँ

१. सोमयागं करिष्यता यजमानेन ऋत्विजां वरणार्थं तत्तत्समीपं यः प्रेष्यते स सोमप्रवाकः।

२. भ्रष्टथवा धानाः, आज्यमिश्रिता यव सक्तवः करम्भः, लाजा=परिवाप, पयस्या=आमिक्षा

- जयपुरम्, राजस्थान
चलभाषः - ९५२९१५२४६८

मनुष्यों को योग्य है कि जो वसु, रुद्र, आदित्य और पितरों से सेवन की हुई वा यज्ञ को सिद्ध करने वाली वाणी वा जल को सेवन, विद्या वा उत्तम क्रिया के साथ बिजुली है उसके सेवन में निरन्तर वर्तें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.११

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३१ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक ३१ अक्टूबर तथा १-२ नवम्बर, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है। जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है - महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३१वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ - २७ अक्टूबर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २ नवम्बर को होगी। यज्ञ के **ब्रह्मा डॉ. वागीश, मुम्बई** होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तरराष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है-**भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। ३१ अक्टूबर, १-२ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता - प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गतवर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। ३१ अक्टूबर को परीक्षा एवं १ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१४ तक 'आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि-उद्यान, अजमेर' इस पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान-समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती है, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३१ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्-आचार्य बलदेव जी, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर, आचार्य विजयपाल जी-झज्जर, स्वामी ऋतस्पति जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बड़ौत, आचार्या सूर्या देवी जी-शिवगंज, डॉ. राजेन्द्र जी विद्यालंकार, डॉ. रामप्रकाश जी, सत्येन्द्रसिंह जी-मेरठ, डॉ. कृष्णपालसिंह जी-जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य-दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री प्रकाश जी आर्य-महू, श्री सत्यपाल जी पथिक, पं. भूपेन्द्र सिंह जी आदि

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	धर्मवीर	ओम मुनि
प्रधान	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

मेरे गुरुवर

- आचार्य प्रदीप कुमार शास्त्री

एक वर्ष पूर्व (श्रावण शुक्लपक्ष प्रतिपदा, वि.सं. २०७०। ७ अगस्त सन् २०१३, बुधवार को) पूज्य गुरुवर आचार्य श्री विजयपाल जी विद्यावारिधि ने संघर्षमय जीवन के लगभग चौरासी सुखद वसन्तों (८४ के चक्र) को पार कर इस पाञ्चभौतिक संसार से महाप्रयाण किया था। वैसे तो उनकी प्रेरणाप्रद आदर्शभूत स्मृतियाँ मेरे चित्त में क्षेत्रिय[१] रूप धारण कर चुकी हैं। लेकिन अवसर-विशेष पर वे कुछ अधिक बलवती हो उठती हैं। जब कभी किसी ग्रन्थ का सम्पादन या छात्रों का अध्यापन करने बैठता हूँ तो वह सौम्य, अहर्निश अनवरत अथक सारस्वत यज्ञ में संलग्न, बाह्याभ्यान्तर श्वेत मूर्ति मेरे सम्मुख उपस्थित हो मेरा मार्गदर्शन करने लगती है। प्रतिक्षण यही भाव मन में बना रहता है कि मेरे गुरुदेव सूक्ष्म दृष्टि से मेरा निरीक्षण कर रहे हैं। मेरे साथ ऐसा होना सम्भवत: स्वाभाविक ही है, क्योंकि गुरुदेव के अन्तेवासियों को सुदीर्घ शृङ्खला में सबसे अधिक समय लगभग बाईस वर्ष (५ जुलाई सन् १९८८ से १ अप्रैल सन् २०१०) तक मुझे आपका स्नेहिल सान्निध्य प्राप्त हुआ है।

गुरुदेव के एक शिष्य-मित्र का महाप्रयाण- पण्डित व्रतपाल जी सिद्धान्तशास्त्री (हैदराबाद, आ.प्र.) गुरुदेव से दस दिन बड़े थे। आपका सम्पूर्ण जीवन पारिवारिक एवं आर्थिक समस्याओं से परिपूर्ण था। लेकिन उनको आपने कभी प्रकट नहीं किया, ना ही कभी उनसे घबराये अथवा परेशान हुए अपितु सदैव प्रसन्नवदन ही दिखाई दिये। आपने सृष्टि -विज्ञान पर वैदिक दृष्टि से पर्याप्त गम्भीर एवं महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। जीवन के अन्तिम क्षण तक भी मन में एक ही इच्छा थी कि आर्यावर्त्त में एक वैदिक नक्षत्रशाला का निर्माण अवश्य हो। उसका सम्पूर्ण मानचित्र आपके मस्तिष्क में व्यवस्थित था। सृष्टि-विज्ञान को समझाने के लिए आपने वेदाधारित सैंकड़ों बृहत् चित्रों का निर्माण तथा एक सचित्र ग्रन्थ 'वैदिक सृष्टि-विज्ञान' का लेखन-प्रकाशन भी अनेक वर्ष पूर्व 'रामलाल कपूर ट्रस्ट' बहालगढ़ से किया था। इस ग्रन्थ के द्वितीय संशोधित, परिवर्धित संस्करण की सज्जा में आप अन्तिम क्षण तक संलग्न रहे। आप बारम्बार कहते रहते थे कि यह ग्रन्थ मेरे जीते जी प्रकाशित होना चाहिए, क्योंकि इस समय मुझे सारे विषय हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष हैं। लेकिन ऐसा हो नहीं सका। काश, ऐसा हो पाता।

जब पाणिनि महाविद्यालय मोतीझील, बनारस में था, तब आपने पूज्य गुरुवर से धातुवृत्ति पर्यन्त व्याकरण शास्त्र का अध्ययन किया था। किन्हीं कारणों से आगे न पढ़ सके। कुछ काल बाद आप वैदिक सृष्टि-विज्ञान के अनुसन्धान में संलग्न हो गये। इस कार्य में आपको पण्डित भगवद्दत्त जी रिसर्च स्कॉलर, पण्डित युधिष्ठिर जी मीमांसक, वैद्य पण्डित सत्यदेव जी वासिष्ठ (भिवानी) तथा आचार्य विजयपाल जी विद्यावारिधि आदि सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वानों का निर्देशन भी यथा समय प्राप्त होता रहता था। जब कभी आप विद्यालय आते थे तो पूज्य गुरुदेव, आप तथा मन्त्री जी (श्री जीवनराम जी) का सात्विक मिलन होता था लेकिन दुर्दैव से तीनों ही इस समय हमारे मध्य में नहीं हैं। आपका महाप्रयाण १ अप्रैल सन् २०१४ को प्रात:काल महाराष्ट्र में हो गया। गुरुदेव का व्यवहार आपके प्रति सदैव मित्रवत् रहता था।

एक युवक का राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य- गुरुदेव की अध्यापनशैली अनूठी थी। मध्य-मध्य में प्राय: मनोविनोद भी चलता रहता था। वैसे तो आप मुख्य विषय से इधर-उधर न स्वयं जाते थे और न ही छात्रों को जाने देते थे। लेकिन फिर भी कभी-कभी आनुषङ्गिक विषय भी चल जाया करते थे। एक बार सम्भवत: तब हमारा निरुक्त का पाठ चल रहा था तो अनुषङ्गत: प्रसङ्ग चलने पर हममें से एक छात्र ने पूछ लिया कि- आचार्य जी! आपकी दृष्टि में आज एक युवक का राष्ट्र के प्रति क्या कर्त्तव्य हो सकता है? गुरुवर गम्भीर होकर बोले- मेरी दृष्टि में एक युवक यदि स्वयं को चारित्रिक, नैतिक, धार्मिक आदि दृष्टियों से सुधार ले तो यही उसका राष्ट्र के प्रति सबसे बड़ा कर्त्तव्य होगा। क्योंकि आज का युवक ही राष्ट्र का भविष्य है।

राष्ट्र और देश में अन्तर- एक बार एक छात्र ने पूछा- आचार्य जी! राष्ट्र और देश में क्या अन्तर है? पूज्य गुरुवर बोले- राष्ट्र का सम्बन्ध हमारी भावनाओं से है। राष्ट्र हमारी भावनाओं में बसता है हम जहाँ कहीं भी जाते हैं तो राष्ट्र हमारे साथ रहता है। जबकि देश स्थानगत परिधियों से बन्धा हुआ है। हम देश की सीमाओं से बाहर भी आ-जा सकते हैं लेकिन राष्ट्र से नहीं।

दो नहीं एक विद्वान्- एक बार जब हमारा सूर्यसिद्धान्त का पाठ चल रहा था तो अनुषङ्गत प्रसङ्गचलने पर हममें से एक छात्र ने कहा कि आचार्य जी! आर्यजगत् के लोगों के लिए यह एक बड़े आश्चर्य का विषय है कि आप तथा पण्डित (युधिष्ठर मीमांसक) जी इतने सुदीर्घ काल से एक ही स्थान पर एक साथ रह कर कार्य कर रहे हैं। इस बात को सुनकर सर्वप्रथम तो गुरुदेव मुस्कुराये, फिर बोले- लोगों को वास्तविकता का पता नहीं है। वास्तविकता यह है कि यहाँ एक ही विद्वान् रहते हैं, वे हैं पण्डित जी। बड़े आश्चर्य की बात है कि लोग मुझे भी विद्वान् समझते हैं।

मैं केवल किताब-बाचूं हूँ- सूर्यसिद्धान्त के पाठ में प्राय: उपपत्तियों पर हम लोग पर्याप्त देरी तक अटके रहते थे। हममें से एक छात्र पर्याप्त मुखर था। वह एक दिन बोला- आप एक-एक उपपत्ति पर इतनी देर लगाते हैं। आप स्पष्ट क्यों नहीं कह देते कि मुझे नहीं आता। इस बात को सुनकर गुरुवर मन्द मुस्कान लिये हुये बोले- अरे भई! मैं तो बार-बार कहता रहता हूँ कि मेरे पास अपना न कोई चिन्तन है, न दर्शन है और ना ही कोई अपना अनुभव है। जो कुछ किताबों में लिखा रहता है उसी को तुम लोगों के सामने बांचता रहता हूँ । मैं तो भई केवल किताब-बाचूं हूँ। उत्तर सुनकर छात्र एकदम चुप हो गया।

ये मेरे लिए भाई से भी बढ़कर हैं- पूज्य गुरुदेव तथा मन्त्री जी (जीवनराम जी) का सम्बन्ध लगभग चौवन वर्षों (सन् १९५८ से सन् २०१२) तक अक्षुण्ण (दोनों की अन्तिम रुग्णावस्था को छोड़कर) बना रहा। दोनों ही एक-दूसरे का रोग-शोक, सुख-दु:ख में बराबर साथ देते थे। जिस दिन मन्त्री जी के प्रात: दर्शन नहीं होते थे तो आचार्य जी स्वयं मन्त्री जी के कक्ष में जाकर कहा करते थे- चों साब! कैसन हाल बा? मन्त्री जी भी प्राय: मजाकिया मूड में कहा करते- सबै कुछ ठीके ठाक बा। श्री जीवनराम जी को पण्डित युधिष्ठिर जी मीमांसक तथा आचार्य जी की पुत्र एवं भाई से भी कहीं अधिक बढ़कर सेवा करते हमने स्वयं अपनी आँखों से देखा था। पण्डित जी अथवा आचार्य जी को कभी स्वास्थ्य-सम्बन्धी गम्भीर समस्या होने पर श्री जीवनराम जी फूट-फूटकर रोते थे। वस्तुत: आप तीनों के पारस्परिक हार्दिक सम्बन्ध को कोई नाम देने के लिए सम्बन्ध-वाचक सारे शब्द अनर्थक से प्रतीत होते हैं। इस सम्बन्ध और सहयोग की छात्रों के मध्य प्राय: अनुषङ्गत चर्चा करते हुए पूज्य गुरुवर भावुक होकर कहा करते थे- जो सेवा और सहयोग श्री जीवनराम जी ने मेरा किया है, इतना तो कोई सगा भाई भी किसी का नहीं करता। ये मेरे लिए भाई से भी बढ़कर हैं।

भगवान् ने अब वे सांचे बन्द कर दिये- पण्डित युधिष्ठिर जी मीमांसक की चर्चा चलने पर पूज्य गुरुदेव प्राय: कहा करते थे कि जिसमें पण्डित जी जैसे व्यक्तित्त्व ढला करते थे, भगवान् ने अब वे सांचे ही बनाने बन्द कर दिये हैं। अब पण्डित जी जैसे त्यागी, तपस्वी, स्वधर्म के प्रति समर्पित व्यक्तित्त्व नहीं मिलते।

विवाह की अनावश्यकता- पूज्य गुरुवर प्रत्येक प्रश्न का, चाहे वह शास्त्रीय हो या फिर निजी जीवन से सम्बन्धित, खुलकर नि:संकोच उत्तर दिया करते थे। एक बार जब मेरे विवाह का प्रसङ्ग चल रहा था तो 'करूँ न करूँ' को लेकर मैं अनिर्णय तथा असमञ्जस की स्थिति में था। तब एक दिन सायङ्कालीन भ्रमण के समय मैंने पूछा- गुरु जी! मुझे विवाह करना चाहिए या नहीं? तब गुरुदेव बोले- भई, इस विषय में तो तुम्हें स्वयं ही निर्णय करना है, तुम्हारे विषय में कोई दूसरा निर्णय नहीं ले सकता। फिर आपने विवाह करने और न करने, दोनों विषयों पर खुलकर प्रकाश डाला तथा दोनों के ही हानि-लाभ मेरे सामने रखे। सब कुछ सुनकर मैंने पूछा-आपने विवाह क्यों नहीं किया? गुरुदेव बोले-इसकी न कभी इच्छा हुई, न कभी इधर ध्यान गया और ना ही इसकी आवश्यकता महसूस हुई। फिर मैंने पूछा-क्या कभी आपको कामवासना ने परेशान नहीं किया? गुरुवर उसी स्वाभाविक गम्भीरता से बोले- नहीं, क्योंकि उसका खर्चा होता रहा। असल में कामवासना है क्या? कामवासना एक शारीरिक ऊर्जा है। ऊर्जा की खपत होती रहनी चाहिए। प्राय: प्राणिजगत् इसका बच्चे पैदा करने या अन्य विषय भोगों में खर्चा करता है। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है कि वह यदि चाहे तो इसे मोड़ दे सकता है। शारीरिक सुख के लिए इन्द्रिय के माध्यम से इसका व्यय करना स्वाभाविक मार्ग है, क्योंकि प्राणिमात्र इस ओर स्वभावत: प्रवृत्त होता है। यह अधोरेता का मार्ग है। जबकि मनुष्य द्वारा बुद्धिपूर्वक इस स्वाभाविक मार्ग में मोड़ देकर इस ऊर्जा का ज्ञान, विद्याभ्यास, मुक्ति, अध्यात्म आदि में विनियोग करना अस्वाभाविक मार्ग है, क्योंकि इसमें प्रयत्न विशेष करना पड़ता है। यही ऊर्ध्वरेता का मार्ग है। इधर यदि कोई मनुष्य इस ऊर्जा का व्यय करता है तो उसे विषय वासना सता ही नहीं सकती। अत: विद्याव्यसनी तथा योगव्यसनी ही आजीवन ब्रह्मचारी रह सकता है,

अन्य नहीं। योगाभ्यासी का भी विद्याभ्यासी होना अत्यन्त अनिवार्य है, अन्यथा व्युत्थान काल में उसे भी विषय परेशान कर सकते हैं।

विपाश का रहस्य- 'वेदवाणी' पत्रिका की लेखक-सूची में प्रायः एक 'विपाश' नाम देखने को मिलता था। एक बार एक छात्र ने पूछ ही लिया कि - गुरु जी! ये 'विपाश' शब्द का रहस्य क्या है? गुरुदेव स्वाभाविक मुस्कान के साथ बोले- अरे भई! इसमें रहस्य-वहस्य कुछ नहीं है। मुझे अपने नाम (विजयपाल शास्त्री) को संक्षिप्त करना था। इसके प्रथम अक्षर से संक्षिप्त किया तो 'वि-पा-शा' शब्द सामने आया। फिर देखा अरे, यह तो स्त्रीलिङ्ग जैसा लगता है तो इसमें व्यावहारिक ह्रस्वत्व करके 'विपाश' बना दिया। फिर मुस्कुराकर बोले-और वैसे भी हमने कोई बन्धन तो पाला नहीं है (विगताः पाशा यस्य सः) इसलिए भी 'विपाश' है।

इसी प्रकार की सैकड़ों स्मृतियाँ उठती-दबती रहती हैं, अस्तु।

टिप्पणी

१. **'क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः'** (अष्टा. ५.२.९२) के अनुसार परशरीर में ही जिनका अपनयन सम्भव हो।

महर्षि पाणिनि आर्ष गुरुकुल, कुटिया, नलवीखुर्द, पो. कुञ्जपुरा, करनाल (हरियाणा) -१३२०२२

पुस्तक परिचय

पुस्तक का नाम - आदर्श परिवारों के आदर्श कर्त्तव्य कर्म

लेखक - विश्वेन्द्रार्य

प्रकाशक- वैदिक ज्ञान-विज्ञान संस्थान, आगरा, बी-४१, प्रतीक एन्क्लेव, कमला नगर, आगरा, उ.प्र.-२८२००५

मूल्य - ३०/- रु. मात्र, **पृष्ठ** - १४४

परमपिता परमात्मा ने मानव को श्रेष्ठ शरीर दिया है। यह हमें श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा ही प्राप्त हुआ है, इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं। जिस परिवार में जन्म लेने का श्रेय मिला वह परिवार आदर्श हो उसके कर्त्तव्य कर्म भी उत्तम हो। इस हेतु जीवन को व परिवार में श्रेष्ठता का बीजारोहण करने के लिए महर्षि देव दयानन्द द्वारा बताये पञ्च महायज्ञों को धारण करें। परमेश्वर की भी आज्ञा है 'प्राञ्च यज्ञं प्रणतया सखाय' ऋग्वेद १०/१०१/२ इस यज्ञ को सभी जन मिलकर किया करें। अथर्ववेद के अनुसार यज्ञ इन्द्रमवर्धयत् (२०/२७/५) यज्ञ से ऐश्वर्य की वृद्धि होती है। यज्ञं तपः (तै. आ. १०/८/१) यज्ञ एक प्रकार का तप है। लोकोपकार के लिए श्रेष्ठ कर्म यज्ञ है। वैदिक संस्कृति में यज्ञों की रूपरेखा विस्तृत रूप में प्रतिपादित की है।

आज हमारे परिवार पाश्चात्य संस्कृति के सांचे में ढल रहे हैं उन्होंने टी.वी., क्लब, आमोद-प्रमोद, नाना प्रकार के नशे, अनेक बुराइयों, चित्रपट्ट आदि को ही जीवन कल्याण का मार्ग समझ रखा है। व्यर्थ की थोथी गप्पों में अपना समय व्यर्थ करते हैं। माता-पिता, परिवार के सदस्यों की देखा देखी का संस्कार नौनिहालों पर पड़ता है। जहाँ परिवार में कभी बड़ों को नमन नहीं होता वे भला अन्य संस्कारों में कैसे ढलेंगे। समय, वातावरण व अवसर सत्सङ्ग आदि द्वारा प्रेरित हो सकते हैं, उन्हें भला ऐसी प्रेरणा के लिए समय ही नहीं है।

आदर्श परिवार में आदर्श कर्त्तव्य कर्म तभी सम्भव है जब परिवार समाज में संगठित है। आज परिवार टूट रहे हैं। हमारी दिनचर्या में श्रेष्ठ कार्यों को महत्व दिया जाय। यज्ञ सर्वश्रेष्ठ है। प्रातःकाल के जागरण मन्त्र- ब्रह्म यज्ञ, स्वाध्याय, भोजन मन्त्र, शयन मन्त्र तक की दिनचर्या पुस्तिका में लेखक ने अथक प्रयास से दी है। वेद मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण किस प्रकार किया जाय सामान्य नियमों से अवगत कराया गया है। अक्षरों के नाम, पहचान और उच्चारण, संयुक्त अक्षर, मन्त्रों के उच्चारण का अभ्यास आदि बताया है यह प्रयास श्रेष्ठ है। यज्ञ प्रार्थना, भजन को भी स्थान दिया है। लेखक की भाषा सर्वग्राह्य, मार्ग प्रशस्त करने वाली है। लेखक का प्रयास व मार्गदर्शन रूपी पत्रिका महान है। पाठक अवश्य मन्थन करें एवं परिवार को आदर्श बनाएं। तभी लेखक की सफलता है।

देव मुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

गुरुजनों की शिक्षा से सब को सुख बढ़ता है। - **महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२९**

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.....

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१८५.	श्वसन क्रियाएं एवं प्राणायाम (सी.डी.)	
१८६.	मोटापा (सी.डी.)	४०.००
१८७.	योगनिद्रा (सी.डी.)	३०.००
१८८.	ध्यान (सी.डी.)	
१९९.	योगनिद्रा (कैसेट)	३०.००
१९०.	ध्यान (कैसेट)	३०.००

श्री रावसाहब रामविलास शारदा

१९१.	आर्य धर्मेन्द्र जीवन (सजिल्द) (स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र)	१००.००

डॉ. रामप्रकाश आर्य

१९२.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन एवं उनकी हिन्दी रचनाएं)	२५०.००

महर्षि गार्ग्य

१९३.	सामपद संहिता सजिल्द (पदपाठः)	२५.००

डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा

१९४.	वेदार्थ विमर्शः (वेदार्थ पारिजात खण्डनम्)	२५.००
१९५.	डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (बढ़िया)	५१.००
१९६.	डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (साधारण)	३१.००

महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि

१९७.	वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (प्रथम भाग)	१६०.००
१९८.	वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (द्वितीय भाग)	१६०.००
१९९.	महाभारत आर्य टीका (प्रथम भाग)	२००.००
२००.	महाभारत आर्य टीका (द्वितीय भाग)	२५०.००

Prof. Tulsi Ram

201.	The Book Of Prayer (Aryabhivinaya)	35.00
202.	Kashi Debate on Idol Worship	20.00
203.	A Critique of Swami Narayan Sect	20.00
204.	An Examination of Vallabha Sect	20.00
205.	Five Great Rituals of the Day (Panch Maha Yajna Vidhi)	20.00
206.	Bhramochhedan (New Edition)	25.00
207.	Bhranti Nivarana	35.00
208.	**Atmakatha**- Swami Dayanand Saraswati	20.00
209.	Bhramochhedan	5.00
210.	Chandapur Fair	5.00

DR. KHAZAN SINGH

211.	Gokaruna Nidhi	12.00

DEENBANDHU HARVILAS SARDA

212.	Life of Dayanand Saraswati	200.00

SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI

213.	Dayanand and His Mission	5.00
214.	Dayanand and interpretation of Vedas	5.00
२१५.	पवित्र धरोहर (सी.डी.)	५१.००

आचार्य उदयवीर शास्त्री

२१६.	जीवन के मोड़ (सजिल्द)	२५०.००

अन्य लेखकों के ग्रन्थ–निम्न पुस्तकों पर कमीशन देय नहीं है।

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	श्री गजानन्द आर्य	
२१७.	वेद सौरभ	१००.००
२१८.	Gokarunanidhi (Eng.)	२५.००
	डॉ. सुरेन्द्र कुमार (भाष्यकार एवं समीक्षक)	
२१९.	मनुस्मृति	३००.००
२२०.	महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति	१५०.००
	सत्यानन्द वेदवागीशः	
२२१.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड)	३००.००
२२२.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड)	३५०.००
	डॉ. वेदपाल सुनीथ	
२२३.	माध्यन्दिन शतपथीय यूप ब्राह्मणों का भाष्य (अजिल्द)	५०.००
२२४.	शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य(अजिल्द)	७०.००
२२५.	शतपथीययूप ब्राह्मण का भाष्य एवं शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (सजिल्द)	१५०.००
२२६.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (विशिष्ट संस्करण)	५०.००
२२७.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (साधारण संस्करण)	२५.००
	आचार्य सत्यव्रत शास्त्री	
२२८.	उणादिकोष	८०.००
२२९.	दयानन्द लहरी	५०.००
	प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार	
२३०.	वेदाध्ययन (भाग–१)	६.००
२३१.	वेदाध्ययन (भाग–२)	७.००
२३२.	वेदाध्ययन (भाग–१०)	६.००
२३३.	प्रार्थना सुमन	४.००
२३४.	ईश्वर! मुझे सुखी कर	
२३५.	कौन तुझको भजते हैं?	८.००
२३६.	पावमानी वरदा वेदमाता	९.००
२३७.	प्रभात वन्दन	६.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
२३८.	भक्ति भरे भजन	११०.००
२३९.	विनय सुमन (भाग–३)	६.००
२४०.	वेद सुधा	८.००
२४१.	वेद पढ़ो और पढ़ाओ	१००.००
२४२.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–२)	६.००
२४३.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–३)	५.००
२४४.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–४)	९.००
२४५.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–५)	६.००
२४६.	Quest for the Infinite	20.00
२४७.	वैदिक आदर्श परिवार (बड़ा आकार)	१५०.००
	श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	
२४८.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–१)	
२४९.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–२)	१६०.००
२५०.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–३)	१७०.००
२५१.	अमर कथा पं. लेखराम	६०.००
२५२.	कवि मनीषी पं. चमूपति	१६०.००
२५३.	कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में	२००.००
२५४.	निष्कलंक दयानन्द	१६०.००
२५५.	मेहता जैमिनी	१५०.००
२५६.	कुरान वेद की छांव में	१५०.००
२५७.	जम्मू शास्त्रार्थ	३०.००
२५८.	महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव	२०.००
२५९.	श्री रामचन्द्र के उपदेश	२५.००
२६०.	धरती हो गई लहुलुहान	३०.००
	विविध ग्रन्थ	
२६१.	नित्यकर्म विधि तथा भजन कीर्तन	२०.००
२६२.	उपनिषद् दीपिका	७०.००
२६३.	आर्य समाज के दस नियम	१०.००
२६४.	मद्यनिषेध शिक्षित शतकम्	१५.००
२६५.	आर्यसमाज क्या है ?	८.००
२६६.	जीवन का उद्देश्य	२०.००

२६७.	वेदोपदेश	३०.००
२६८.	सत्यार्थ प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन	२०.००
२६९.	भगवान् राम और राम–भक्त	२५.००
२७०.	जीवन निर्माण	२५.००
२७१.	१०० वर्ष जीने के साधन नित्यकर्म	२५.००
२७२.	दयानन्द शतक	८.००
२७३.	जागृति पुष्प	८.००
२७४.	त्यागवाद	२५.००
२७५.	भस्मान्तं शरीरम्	८.००
२७६.	जीवन मृत्यु का चिन्तन	२०.००
२७७.	ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप	१०.००
२७८.	कर्म करो महान बनो	१४.००
२७९.	अष्टाध्यायी सूत्रपाठ	५०.००
२८०.	आनन्द बहार शायरी	१५.००
२८१.	वैदिक वीर गर्जना	२५.००
२८२.	पर्यावरण विज्ञानम्	२०.००

DR. HARISH CHANDRA

283	The Human Nature & Human Food	12.00
284.	Vedas & Us	15.00
285.	What in the Law of Karma	150.00
286.	As Simple as it Get	80.00
287.	The Thought for Food	150.00
288.	Marriage Family & Love	15.00
289.	Enriching the Life	150.00

डॉ. वेदप्रकाश गुप्त

२९०.	दयानन्द दर्शन	६०.००
२९१.	Philoshophy of Dayanand	150.00
२९२.	महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन	२०.००

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

२९३.	आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु	६०.००
२९४.	आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण (आचार्य सत्यजित् जी)	४०.००

भूले ऋषि दयानन्द को

– गीता धनवानी

कुदरत नहीं बदलती है, ये ना बदले धरती आकाश,
चाँद, सितारे, सूरज देते आये हैं, अब तक प्रकाश,
लेकिन मानव भूल गया है, मानवता के सब सद्गुण,
सत का असर बहुत कम है, रज, तम का है ज्यादा आभास।

युग बदला और है बदला, मानव से मानव का प्यार
आदर्शों को त्याग रहा है, धीरे–धीरे सब संसार,
खुशियाँ हुई तिरोहित सारी, छिन गया जीवन का आधार,
क्यों आतन्कवाद बढ़ा है, इस पर किसने किया विचार।

माता, बहनें और बेटियाँ नहीं सुरक्षित रही यहाँ,
इनको देवी नहीं मानते, ना ये रक्षित रही यहाँ,
दृष्टिकोण नहीं बदला है नारी को लेकर अब तक,
क्रूर पिशाचों के द्वारा नारी भक्षित रही यहाँ।

आशीर्वाद नहीं मिलता है, यहाँ आज बुजुर्गों का,
कोई ध्यान नहीं रखता है, निर्बल बूढ़े वर्गों का,
माता–पिता की सेवा को है भक्ति नहीं मानते अब,
आडम्बर है बनी सीढ़ियाँ रास्ता बना स्वर्गों का।

ऋषियों ने जो राह बताई, भूल गये उस आनन्द को,
भूल गये वेद ज्ञान को, भूल ऋषि दयानन्द को,
खानपान है बिगड़ गये और रुचि बदल दी है सारी,
और स्वदेशी त्याग विदेशी रख ली सर ऊपर गंद को।

फिर भी दिल में आशाये हैं, स्वर्ण काल अब आयेगा,
विश्वासों की बुनियादों पर सबल भवन बन जायेगा,
युग बदलेगा, सब सुधरेंगे, आर्य बनायेंगे सब को,
उच्च विचारों आदर्शों को पुनः राष्ट्र अब पायेगा।

– डिग्गी बाजार, अजमेर

विरजानन्द दैवकरणि
बाणभट्ट सम्मान से सम्मानित

विरजानन्द दैवकरणि का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण त्रयोदशी सम्वत् २००२ विक्रमी (२ दिसम्बर १९४५) को ग्राम भगड्याणा (महेन्द्रगढ़, हरियाणा) में माता श्रीमती सरियां देवी और पिता श्री देवकरण यादव के घर में हुआ।

महेन्द्रगढ़ के यादवेन्द्र हाई स्कूल में अष्टमकक्षा उत्तीर्ण करके ५ मई १९५९ को गुरुकुल झज्जर में प्रवेश लिया। गुरुकुल झज्जर में रहते हुए सन् १९६४ तक व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य, इतिहासाचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति और सिद्धान्त प्रभाकर आदि परीक्षायें उत्तीर्ण कीं।

विरजानन्द दैवकरणि अपनी विद्वत्ता, त्याग, तप के कारण आज विद्वानों में एक परिचित नाम है। वे जीवन में जितने सरल है, उनकी विद्वत्ता उतनी गहरी है। वैसे तो आपका शास्त्रीय ज्ञान बहुमुखी है आपने वेद, व्याकरण, दर्शन, साहित्य का अध्ययन गुरुकुल परम्परा में रहकर गुरुमुख से किया है परन्तु आप की पहचान एक पुराशास्त्रवेत्ता के रूप में की जाती है। पुरानी पाण्डुलिपियों, शिलालेखों, मुद्रालेखों को पढ़ने में आपको दक्षता प्राप्त है।

गुरुकुल झज्जर के आचार्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के सान्निध्य में रहते हुए हरियाणा प्रान्तीय पुरातत्त्व संग्रहालय में कार्य करते हुए प्राचीनमुद्रा, मुद्रांक (मोहर), शिलालेख, मुद्रासांचे, मृण्मूर्तियों, प्रस्तरमूर्तियों, मणकों, ताम्रयुगीन शस्त्रास्त्रों और पाण्डुलिपियों का संग्रह करते हुए उनपर लिखित ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक, उर्दू, फारसी, अरबी लिपि में लिखे शासकों के नाम आदि का अध्ययन और उनका प्रकाशन कर रहे हैं। भारत सरकार के पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग की ओर से होने वाले उत्खननों में प्राप्त होने वाले मुद्रा, मुद्रांकों और शिलालेखों के अध्ययन और पहचान करने के लिए आपकी सेवायें ली जाती हैं। जैसे संघोल (पंजाब), हांसी (हरियाणा), अहिच्छत्रा (बरेली), काशीपुर (गोविषाण), फतेहपुर सीकरी (आगरा), देहरादून, नौरंगाबाद, अगरोहा और खोखराकोट आदि के उत्खननों में आपका सहयोग लिया गया।

विरजानन्द दैवकरणि ने अपने अध्ययन काल से ही लेखन कार्य प्रारम्भ कर दिया था। अनेक शोधकर्त्ता आपकी सेवाओं का लाभ उठा चुके हैं। आपने वैदिक साहित्य में १५३१ विक्रम सम्वत् सामवेद की एक पाण्डुलिपि का सम्पादन कर प्रकाशन कराया है। साहित्य में पिङ्गल, छन्द, सूत्र का सम्पादन किया है। दैवकरणि श्रम का सम्मान करने वाले विद्वान् हैं, आपने इतिहास की सामग्री प्राप्त करने के लिए हजारों मील की यात्रायें की, सैंकड़ों गाँव, खेड़ों पर खुदाई में भाग लिया, स्थान-स्थान से ऐतिहासिक सामग्री एकत्र कर इतिहास को जीवित किया। ऐसे विद्वान् को हरियाणा सरकार की संस्कृत साहित्य अकादमी ने बाणभट्ट पुरस्कार के लिए उनका चयनकर उनकी विद्वत्ता व योग्यता का सम्मान किया है। साहित्य अकादमी धन्यवाद की पात्र है और विद्वान् विरजानन्द दैवकरणि बधाई के।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित हस्तलेखों का पटलीकरण तथा उनके आधार पर उनके ग्रन्थों का सम्पादन कार्य भी आप करते रहे हैं। गुरुकुल झज्जर के संग्रहालय में स्थित ४२७ ताम्रपत्रों पर सत्यार्थप्रकाश को उत्कीर्ण करने में आपका योगदान सर्वाधिक है। गुरुकुल गौतमनगर (दिल्ली) की ओर से यजुर्वेद और सामवेद को, तथा अष्टाध्यायी आदि को ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण करने में भी आपका प्रयास स्तुत्य है।

आपने प्राचीन भारतीय इतिहास शोधपरिषद् की स्थापना की है। इसका कार्यालय गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में है। इसकी ओर से अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है।

हरियाणा सरकार का पुरातत्त्व विभाग भी विरजानन्द जी के मार्गदर्शन में काम करके गौरव अनुभव करता है। स्वामी ओमानन्द जी के साथ रहकर आपने पुरातत्त्व सामग्री की खोज, संग्रह, अध्ययन, वर्गीकरण, अनुसन्धान में दक्षता प्राप्त की है। लिपि अध्ययन मृण्मूर्तियों के सम्बन्ध में अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

दैवकरणि का सम्पूर्ण जीवन साहित्य और समाज की सेवा में व्यतीत हुआ। आपने एक छात्र के रूप में १९५९ में गुरुकुल में प्रवेश लिया था। छात्र रहते हुए स्वामी ओमानन्द जी के साथ रहते, ऐतिहासिक यात्रा करते-करते आप इस विषय में पारंगत हुए। आज गुरुकुल झज्जर के विशाल पुरातत्त्व संग्रहालय को सम्भाल रहे हैं। इस संग्रहालय में

अलभ्य स्वर्ण मुद्रायें, प्राचीन शिलालेख, ताम्रलेख, मिट्टी के लेख, मृण्मूर्तियाँ, ठप्पे, पाण्डुलिपियाँ, सब प्रकार की ऐतिहासिक सामग्री, प्राचीन महाभारत कालीन शस्त्रास्त्र न जाने कितनी वस्तुयें प्रचुरमात्रा और बड़ी संख्या में विद्यमान हैं आज इतिहास का अध्ययन करने वाले देश-विदेश के सैंकड़ों विद्वान् और शोध छात्रों के लिए गुरुकुल झज्जर का संग्रहालय प्रामाणिक सामग्री का एक बहुत बड़ा स्रोत है इतिहास प्रेमी बड़ी संख्या में वर्ष भर संग्रहालय देखने और लाभ उठाने के लिए आते हैं।

चारों वेद, छह शास्त्र, ११ उपनिषद्, अष्टाध्यायी, छन्द:शास्त्र, काव्यालंकार, सत्यार्थप्रकाश, चिकित्साग्रन्थ और इतिहास पुरातत्त्व आदि के कई दर्जन ग्रन्थों का सम्पादन आपने किया है।

आप द्वारा रचित, सम्पादित कुछ ग्रन्थ इस प्रकार हैं-

१. महर्षि दयानन्द और उनके सिद्धान्त।
२. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत।
३. कुतुब मीनार: एक रहस्योद्घाटन।
४. स्वस्तिक चिह्न: ओम् का प्राचीनतम् रूप।
५. महाभारत युद्ध, बुद्ध, शंकराचार्य, सिकन्दर और हर्ष के कालक्रम पर पुनर्विचार।
६. छन्द: शास्त्र का हिन्दी रूपान्तर।
७. सामगान पद्धति (पाण्डुलिपि) का सम्पादन। सम्वत् १५३१ विक्रमी।
८. ज्ञानज्योति (पाण्डुलिपि) का सम्पादन। सम्वत् १८९६ विक्रमी।
९. आगम प्रकाश (पाण्डुलिपि) का सम्पादन। सम्वत् १८९५ विक्रमी।
१०. प्राचीन भारत में रामायण के मन्दिर।
११. नौरंगाबाद (बामला) की मृन्मूर्तियाँ।
१२. अगरोहा (अग्रोदक) की मृन्मूर्तियाँ।
१३. प्राचीन भारत में यौधेगणराज्य (सम्पादन)
१४. पांचाल राज्य का इतिहास (सम्पादन)
१५. सत्यार्थप्रकाश के पाठ भेदों की तुलना।
१६. चतुर्वेद विषय सूची (सम्पादन)
१७. लक्ष्मीसूक्त का हिन्दी रूपान्तर।
१८. निरुक्त (संस्कृत मूल का सम्पादन)।
१९. निघण्टु (संस्कृत मूल का सम्पादन)
२०. मन की लहर (पं. रामप्रसाद बिस्मिल) सम्पादन।
२१. बोल्शेविको की करतूत (पं. रामप्रसाद बिस्मिल) सम्पादन - अप्रकाशित।

अनेक पत्रिकाओं में इतिहास, पुरातत्त्व, वैदिक सिद्धान्त, योग, प्राणायाम आदि से सम्बद्ध लेख लिखते रहे हैं। आजकल हरयाणा प्रान्तीय पुरातत्त्व संग्रहालय गुरुकुल झज्जर के निदेशक हैं।

आप परोपकारिणी सभा के सम्मानीत सदस्य है।

आपकी यह सारस्वत साधना इसी प्रकार निरन्तर चलती रहे और समाज का मार्ग दर्शन करती रहे।

इस अवसर पर हम आपके दीर्घ जीवन व उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हैं।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३० जुलाई २०१४ तक)

१. श्री भास्कर सेन, गुप्ता, बैंगलूर, कर्नाटक २. स्वास्तिकमाह: चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महा. ३. श्रीमती रेखा राकेश बियानी, जोधपुर, राज. ४. श्री ओमप्रकाश तोषनिवाल, किशनगढ़, राज. ५. श्री तुलसीराम टेलर, गुलाबपुरा, भीलवाड़ा, राज. ६. श्री राजेन्द्र रामपाल खण्डेलवाल, गुलाबपुरा, भीलवाड़ा, राज. ७. श्री सुरेशचन्द आर्य, पटना, बिहार ८. श्रीमती कमला देवी पंचोली, अजमेर ९. श्री बलवीर सिंह बत्रा, अजमेर १०. श्री रवि प्रकाश गुप्ता, ग्वालियर, म.प्र. ११. श्री एम.एल. बारिया, अजमेर १२. श्री विजयसिंह गहलोत, अजमेर १३. श्री स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर १४. श्रीमती प्रतिभा राजगुरु, अजमेर १५. श्रीमती रतनी देवी, रोहतक, हरि. १६. श्री फूलसिंह, रोहतक, हरियाणा १७. श्री चन्द्रभान, गुड़गाँव, हरि. १८. श्री अश्विनी कुमार सैनी, गुड़गाँव, हरि. १९. श्रीमती मेहता माता, अजमेर २०. श्री चन्द्रसेन हरसिंघानी, अहमदाबाद, गुज. २१. श्री भैरूलाल राठौड़, अजमेर २२. श्री कपूर साहेब, भीलवाड़ा, राज. २३. श्री क्रान्ति शर्मा, सहारनपुर, उ.प्र. २४. श्री विशाल रामचन्द्र, फजिल्का, पंजाब २५. श्री आर.के.पी. होलिडेज एण्ड होटल प्रा.लि., गुड़गाँव, हरि. २६. होण्डा ब्रुश मेनूफेक्चरिंग कं., गुड़गाँव, हरि. २७. श्री अनिल वाधवा, फुरगाँव, हरि. २८. श्री मोहन नमकीन, गुड़गाँव, हरि. २९. टुटेजा सिमेन्ट स्टोर, गुड़गाँव, हरि. ३०. श्री हरिश बुट हॉउस, गुड़गाँव, हरि. ३१. श्री प्रवीण पाहुजा, गुड़गाँव, हरि. ३२. श्री सुभाष सचदेवा, गुड़गाँव, हरि. ३३. श्रीमती नीलिमा कामराह, गुड़गाँव, हरि.३४. श्री दिनेश नागपाल, गुड़गाँव, हरि. ३५. ईशा एसोसियटस, गुड़गाँव, हरि. ३६. श्री आनन्द अग्रवाल, फरीदाबाद ३७. श्री प्रणव व निशिका अग्रवाल, फरीदाबाद ३८. श्री श्याम सुन्दर राठी, दिल्ली ३९. श्री शैलेन्द्र प्रसाद, न्यूयार्क ४०. मै. हरिकिशन ओमप्रकाश, दिल्ली ४१. सुश्री पायल तोषनिवाल, किशनगढ़, राज.।

–परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों को नि:शुल्क दिया जाता है। आप सभी गौ–भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३० जुलाई २०१४ तक)

१. श्री चन्द्रप्रकाश त्यागी, रुड़की, उत्तराखण्ड २. श्री रमेशचन्द भारद्वाज, भिवानी, हरियाणा ३. श्री बिहारीलाल नासा, भिवानी, हरियाणा ४. श्री सुनील कुमार अरोड़ा, जयपुर, राज. ५. डॉ. सुशील कुमार आर्य, बुलन्दशहर ६. श्री सन्तोष मदान, नई दिल्ली ७. श्री ओमप्रकाश तोषनिवाल, किशनगढ़, राज. ८. श्रीमती कमला देवी पंचोली, अजमेर ९. श्रीमती सुशीला शर्मा, अजमेर १०. श्री रविप्रकाश गुप्ता, ग्वालियर, म.प्र. ११. श्री विजयसिंह गहलोत, अजमेर १२. श्री श्रवणलाल, अजमेर १३. सुश्री अदिति, अजमेर १४. श्री चन्द्रभान, गुड़गाँव, हरि. १५. श्रीमती विनिता चौहान, अजमेर १६. श्री अमित नांगल, रोहतक, हरि. १७. श्री रविकान्त, नई दिल्ली १८. श्रीमती नीलम नांगिया, दिल्ली १९. श्रीमती लता नारंग, दिल्ली २०. श्री रमेशचन्द वर्मा, अजमेर २१. श्री मयंक, अजमेर २२. श्रीमती निर्मला माता, अजमेर २३. श्री राजू, अजमेर २४. श्रीमती दीपा नारवानी, अजमेर २५. श्री महेन्द्र मोहन आर्य, श्रीगंगानगर, राज. २६. श्री पवनकुमार नागपाल, अबोहर, पंजाब २७. श्रीमती सुशीला गोकुलचन्द भगत, जालन्धर, पंजाब २८. श्रीमती सीमा गुप्ता, बिलासपुर, छ.ग. २९. श्रीमती शान्ता गायकवाड़, जबलपुर, म.प्र.।

–परोपकारिणी सभा, अजमेर।

भगवान कौन ?

- महेन्द्र आर्य

आजकल देश में एक नया विवाद खड़ा हो गया है। ज्योतिष व द्वारिका-शारदा पीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने शिरडी के साईं बाबा को अवतार मानने से इन्कार कर दिया है। उन्होंने कहा, ''सांई भक्ति अन्धविश्वास के सिवाय कुछ नहीं। साईं के मन्दिर बनाकर पूजा-अर्चना सनातन धर्म के विरूद्ध है। इससे हिन्दू समाज के बँटने का खतरा पैदा हो गया है। साईं हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक नहीं हैं। जिन लोगों को धर्म का ठीक प्रकार से ज्ञान नहीं है, वे साईं भक्ति की बात कह रहे हैं। अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कुछ लोग इस तरह के अन्धविश्वास को बढ़ावा दे रहे हैं।''

शंकराचार्य ने कहा कि वेद-पुराणों में कहीं भी साईं के अवतार का उल्लेख नहीं किया गया है। कुछ लोग मन्दिरों व घरों में साईं की मूर्ति लगा रहे हैं, यह भगवान की आराधना नहीं है। सनातनी परम्परा में सभी देवताओं के मन्त्र और यन्त्र हैं।

लो साहब! शंकराचार्य ने जैसे कोई विवाद का बन्द पड़ा पिटारा ही खोल दिया है। महन्तो, पण्डों, तथाकथित हिन्दू धर्म के विद्वानों के दो भाग हुए। कुछ साईं अर्चना के पक्ष में और बाकी विपक्ष में। टेलीविजन चैनलों को तो टी.आर.पी. चाहिये। बस भिड़ा दिया दोनों पक्षों को। टेलीविजन पर आने का मौका कोई छोड़ने को तैयार नहीं। हँसी आती है हिन्दू समाज के इन ठेकेदारों के इस वाद विवाद पर। भगवान को परिभाषित करने की होड़ है। एक ही साँस में ये ज्ञानी पुरुष वेद और पुराण को एक ही तराजू पर तौलते हैं।

सच्चाई ये है कि इंसान भगवान को खोजता है- इंसानों में, चमत्कारों में, अनहोनी में। और दूसरी सच्चाई ये है कि ईश्वर इनमें से किसी में भी नहीं है। राम, कृष्ण, ईशा मसीह, पैगम्बर मुहम्मद हो या फिर साईं बाबा- ये सभी इन्सान के रूप में ही परिभाषित होते हैं, सम्भवत: विशिष्ट इन्सानों के रूप में लेकिन भगवान किसी भी तरह से नहीं हो सकते। इनकी मूर्तियाँ तो कतई नहीं।

चमत्कार या अनहोनी भी भगवान नहीं होते। वास्तव में चमत्कार अनहोनी कुछ होते ही नहीं, वे घटनाएँ हैं जिन्हें अपनी अल्पज्ञता के कारण इंसान कभी समझ ही नहीं पाता। एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो सभ्यता से दूर कहीं जंगल में पैदा हुआ हो और बड़ा हुआ हो- उसके लिए गाड़ी, रेल, टेलीविजन, बन्दूक सब कुछ चमत्कार है। इन्सान जो कुछ समझ नहीं पाता उसे वे बातें चमत्कार या अनहोनी लगती हैं।

फिर भगवान है क्या? भारत में एक संन्यासी हुआ था-महर्षि दयानन्द सरस्वती। जब अत्यन्त श्रद्धा से युक्त उसने शिवलिङ्ग पर स्वतन्त्रता से दौड़ते, गन्दगी फैलाते हुए चूहों को देखा तो उसका शिवलिङ्ग ईश्वर है, यह विश्वास डोल गया, तो उसने सच्चे ईश्वर की खोज शुरु की। घर त्याग दिया। देश भर में घूमता रहा। सारे उपलब्ध ग्रन्थ पढ़ डाले। विभिन्न मतों के गुरुओं से शास्त्रार्थ किया और अन्त में अपने सारे ज्ञान का निचोड़ निकाला और उस निचोड़ में से निकली ईश्वर की परिभाषा और वो परिभाषा कुछ ऐसी ''ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा,अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।''

मेरी दुनिया भर के हर धर्म के पण्डित, विद्वान्, मौलवी, आर्च-बिशप, गुरु और धर्माचार्यों से अनुरोध है कि वे इस परिभाषा में दिए गए २० विशेषणों में से किसी भी एक को गलत सिद्ध कर दें, या फिर कोई एक नया विशेषण जोड़ दें जो इस बीस विशेषणों में निहित न हो और अगर ये दोनों बातें सम्भव न हो तो फिर महर्षि दयानन्द कृत ईश्वर की इस परिभाषा को परम सत्य मान लें और एक बार ऐसा मान लिया तो सारे प्रश्न अपने आप हल हो जाएंगे।

इस परिभाषा की कसौटी पर तौले हर उस व्यक्ति को जिसे वे भगवान मानने का आग्रह करते हैं- समाज के ये धर्माधिकारी । उत्तर स्वयं सिद्ध होगा।

- मुम्बई

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

मनुष्यों को ईश्वर की इस सृष्टि में विद्वानों का अनुकरण सदा करना और मूर्खों का अनुकरण कभी न करना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२३

हे विद्वान् मनुष्य! जैसे सूर्य अपने प्रकाश से चोर, व्याघ्र आदि प्राणियों को भय दिखा कर अन्य प्राणियों को सुखी करता है वैसे ही तू भी सब शत्रुओं को निवारण कर प्रजा को सुखी कर।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२४

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के उपनिषद् प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

जिज्ञासा समाधान – ६९

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा– आदरणीय आचार्य जी, सादर नमस्ते।

१. कृपया सामवेद का सन्दर्भ ग्रहण करने की कृपा करें। मेरी शंका है कि सामवेद में अनेक मन्त्र ऐसे हैं जो कि दो बार छपे हैं। क्या मन्त्रों की संख्या बढ़ाने का उद्देश्य रहा है या कोई और कारण? उदाहरण के लिये

मन्त्र संख्या १११३ – यही मन्त्र (ऋषि व देवता भी वही) मन्त्र संख्या ४४६ पर है।

मन्त्र संख्या १११४ – यही मन्त्र (ऋषि व देवता भी वही) मन्त्र संख्या ४४५ पर है।

मन्त्र संख्या १११५ – यही मन्त्र (ऋषि व देवता भी वही) मन्त्र संख्या ४४४ पर है।

मन्त्र संख्या १११६ – यही मन्त्र (ऋषि व देवता भी वही) मन्त्र संख्या ५२४ पर है।

मन्त्र संख्या ११३७ – यह मन्त्र पुनः ४९८ पर है।

मन्त्र संख्या ११४० – यह मन्त्र पुनः ६७ पर है।

मन्त्र संख्या ११५२ – यह मन्त्र पुनः ५५७ पर है।

आखिर क्या कारण है कि एक ही ऋषि, एक ही देवता आदि दो-दो बार वेद में आया है, कृपया स्पष्ट करने की कृपा करें।

२. प्रत्येक वेद में मन्त्र के साथ उसका ऋषि, देवता, छन्द, स्वर आदि दिया गया है तथा वेद भाष्य कर्ता का नाम वेद के साथ दिया गया है। किन्तु ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद में मुझे किसी ऋषि अंगिरा, आदित्य, वायु नाम नहीं लिखा हुआ दिखा।

जबकि इन्हीं ऋषियों को वेद ज्ञान ईश्वर ने प्रदत्त किया।

सर्व साधारण के ज्ञान के लिये प्रत्येक वेद के साथ उसके द्रष्टा ऋषि का नाम अवश्य ही वेद पर मोटे अक्षरों में दिया जाना चाहिये।

कृपया मेरी भूल भी हो सकती है जो कि मेरी समझ में न आ पाई हो। कृपया सुधार कर ज्ञान प्रदान करने की महती कृपा करें।

– कृष्ण गोपाल, मन्त्री, आर्यसमाज टनकपुर, चम्पावत, उत्तराखण्ड

समाधान– परमेश्वर के द्वारा किया गया वेदोपदेश हम जीवात्माओं के लिए परम प्रमाण है। ऋषियों ने वेद को स्वतः प्रमाण कहा है। वेद का प्रत्येक मन्त्र, प्रत्येक पाद, प्रत्येक शब्द सार्थक है, सप्रयोजन है, विशेष आशय को लिए हुए हैं।

वैदिक संहिताओं का अध्ययन करते हुए कई अन्य समस्याओं के समान पुनरुक्त की समस्या भी हमारे सामने आती है। जब एक मन्त्र को एक ही वेद में एक से अधिक बार आया हुआ देखते हैं या उस मन्त्र को अन्य वेदों में भी पाते हैं तो स्वभावतः हमारे मन में यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि ऐसा क्यों है और अनेक लोग इसको पुनरुक्त दोष समझने लगते हैं। ऐसा ही आशय आपका भी प्रतीत हो रहा है।

'वेदों में पुनरुक्त दोष नहीं है' इस विषय पर विद्वानों ने बहुत लिखा है। उन्हीं विद्वानों के आधार पर हम यहाँ कुछ लिखते हैं।

वेदों में पुनर्कथन के कई प्रकार हैं। जैसे- १. कहीं-कहीं सम्पूर्ण सूक्त का पुनर्कथन हुआ है। जैसे ऋग्वेद का १०.१० यम-यमी सूक्त कहलाता है। यह सम्पूर्ण सूक्त अथर्ववेद १८.१ में भी है। ऋग्वेद का १०.१५४ के पाँच मन्त्र भाववृत्त सूक्त है, यह बहुत कम परिवर्तन के साथ अथर्ववेद १८.२ में भी आया है। ऋग्वेद का १०.९५ सोम सूर्या सूक्त या विवाह सूक्त के नाम से प्रसिद्ध है, यह सम्पूर्ण सूक्त थोड़े से क्रमादि भेद के साथ अथर्ववेद १४.१ में आया है। ऋग्वेद का पुरुष सूक्त १०.९० कुछ परिवर्तन के साथ यजुर्वेद अध्याय ३१ तथा अथर्ववेद १९.६ में भी है और इसके कुछ मन्त्र सामवेद में पूर्वार्चिक के आरण्य पर्व में भी हैं। इसी प्रकार कुछ अन्य सूक्त भी हो सकते हैं।

२. कहीं-कहीं पूरा सूक्त पुनरुक्त न होकर उसके २, ३ या अधिक मन्त्र उसी क्रम से उसी वेद में या अन्य वेदों में आये हैं। जैसे ऋग्वेद के ४.३१ के पहले तीन मन्त्र-

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता।।१।।
कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः।
दृढा चिदारुजे वसु।।२।।
अभी षुणः सखीनामविता जरितॄणाम्।
शतं भवास्यूतिभिः।।३।।

इसी क्रम से यजुर्वेद में अध्याय २७.३९-४१, अध्याय ३६.४-६ दो स्थानों पर हैं। सामवेद में उत्तरार्चिक, प्रथम प्रपाठक के तृतीय खण्ड में और अथर्ववेद में काण्ड २०

सू. १२४.१-३ में आये हैं।

३. कहीं अकेला १ मन्त्र ही पुनरुक्त हुआ है। जैसे- **तत् सवितुर्वरेण्यम्** आदि। यह मन्त्र गायत्री मन्त्र नाम से प्रसिद्ध है। यह मन्त्र ऋग्वेद और सामवेद में एक-एक बार और यजुर्वेद में तीन बार आया है। ऋ. ३.६२.१०, यजु. ३.३५, २२.९, ३०.२, साम.उ.प्र. ६.६.३। यदि यजुर्वेद के ३६.३ को भी गिन लें तो यह मन्त्र यजुर्वेद में चार बार आया है। वहाँ पर **भूर्भुवः स्वः** अधिक पढ़ा गया है। ऐसे पुनरुक्त मन्त्र बहुत अधिक मात्रा में हैं।

४. कहीं पूरा मन्त्र पुनरुक्त न होकर उसका कुछ अंश पुनरुक्त होता है। यह अंश तीन चरण, दो चरण, एक चरण, एक चरण से कम और एक दो या तीन चरणों से अधिक भी हो सकता है। जैसे- ऋग्वेद १.२९.१

याच्चिद्धि सत्य सोमपा अनाशस्ता इव स्मसि।
आ तू इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ।।

इस मन्त्र का उत्तरार्ध इस सूक्त के सातों मन्त्रों में आया है। ऋ. १.९७ वें सूक्त में प्रत्येक मन्त्र में '**अप नः शोशुचदघम्**' की आवृत्ति हुई। ऐसी ही अन्य स्थलों पर भी पुनरावृत्ति मिलती है।

५. एक ही भाव अनेक बार पुनरुक्त हुआ है, भले भाषा भिन्न हो। जैसे इन्द्र वृत्रों का संहारक, ऐश्वर्यशाली, बहुत दानी और सोमरस का पीने वाला है; अग्नि देवों का दूत, ज्योतिष्मान्, हवि का भक्षण करने वाला एवं दाश्वान् का हित करने वाला है; उषा द्युलोक की पुत्री, ज्योतिष्मती तथा अन्धकार को उच्छिन्न करने वाली है इत्यादि भाव वेदों में बार-बार आते हैं। कोई कह सकता है कि एक भाव को एक ही बार कहना प्रर्याप्त था।

इस प्रकार की पुनरुक्तियाँ वेद में दृष्टिगोचर होती हैं। ये पुनरुक्तियाँ सर्वथा दोष रहित हैं। बिना प्रयोजन के निरर्थक पुनरुक्ति दोष पूर्ण मानी जाती है, किन्तु प्रयोजन युक्त सार्थक पुनरुक्ति दोषपूर्ण नहीं मानी जाती। वेद में जो भी पुनर्वचन मिलते हैं वे सभी प्रयोजनयुक्त और सार्थक हैं।

सार्थक पुनरुक्ति के कारण- १. अर्थ का वैशिष्ट्य दिखाना, २. भिन्नार्थ का प्रकट करना, ३. काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तानुसार अलंकार की योजना, ४. किसी अर्थतत्त्व पर विशेष बल देना, ५. प्रकरण भेद से भिन्नार्थ का बोध करना, ६. किसी विशेष प्रकरण की ओर ध्यान आकृष्ट करा अथवा विशेष अर्थतत्त्व को अध्येता के मन पर अच्छे प्रकार जमा देना आदि अनेक कारण पुनरुक्ति के होते हैं। वेदों में एक बात को ठीक से समझाने के लिए, अर्थ विशेष को समझाने के लिए, प्रसंग भेद से भिन्न अर्थ का ज्ञान कराने के लिए, काव्य के सौन्दर्य के लिए पुनरुक्तियाँ हैं।

एक उपदेशक अपने जीवन काल में एक ही उपदेश को अथवा किसी कथा को स्थान भेद से वा प्रसंग विशेष पर हजारों बार करता है, वह उसका उपदेश वा कथन हमें पुनरुक्त नहीं लगता। हम अपने जीवन में प्रत्येक दिन एक ही शब्द वा वाक्य को अनेक बार बोलते रहते हैं, वह हमें पुनरुक्त नहीं लगता। हम एक दिन में किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु का नाम न जाने कितनी बार लेते हैं, यह हमें पुनरुक्त नहीं लगता। पाणिनि अष्टाध्यायी को जानने वाले को 'बहुलं छन्दसि' सूत्र जो कि अष्टाध्यायी में इसी शब्दानुपूर्वी से १४ बार पढ़ा गया है, पुनरुक्त नहीं लगता। भाषा विज्ञान को ठीक-ठीक जानने वाला उपरोक्त कारणों से कहे गये पुनर्वचन को दोषयुक्त नहीं देखता अपितु इस पुनर्वचन (पुनरुक्त) को आवश्यक समझता है।

जब हम इस प्रकार की पुनरुक्त को सहजता से समझ लेते हैं, स्वीकार कर लेते हैं, तो वेद में आये पुनर्मन्त्रों को संशय की दृष्टि से क्यों देखते हैं, क्योंकि हम वेद की शैली से परिचित नहीं हैं, वेद के अर्थगाम्भीर्य से, उसकी काव्य शैली से परिचित नहीं हैं, जैसे-जैसे यह परिचय बढ़ेगा वैसे-वैसे हम वेद की पुनरुक्तियों को दोष रहित देखने में समर्थ होते जायेंगे।

आपने जो सामवेद के मन्त्र उद्धृत किये हैं, जो कि सामवेद के पूर्वार्चिक व उत्तरार्चिक दोनों में आये हैं, उनका दो बार आना मन्त्र संख्या को बढ़ाना उद्देश्य नहीं है अपितु इसके पूर्वोक्त कारण हैं। भले ही इन मन्त्रों के ऋषि, देवता, छन्द एक ही हों।

२. वेद मन्त्रों के द्रष्टा को ऋषि कहते हैं। जिन-जिन महापुरुषों ने वेद के मन्त्रों को प्रथम बार साक्षात् किया अर्थात् उन मन्त्रों के अर्थ का प्रत्यक्ष किया वे उन मन्त्रों के ऋषि कहलाये। उन्हीं ऋषियों के नाम, उनके द्वारा प्रत्यक्ष किये गये मन्त्रों के साथ जुड़ गये। जो कि हमें आज परम्परा से वेद मन्त्रों के साथ उपलब्ध हो रहे हैं।

आपका कथन है कि अग्नि, वायु, आदित्य, अङ्गिरा ऋषियों के नाम वेद के साथ क्यों नहीं, जबकि परमेश्वर ने इन्हीं को प्रथम बार वेद का ज्ञान दिया।

अग्नि आदि ऋषियों के नाम भले ही मन्त्रों के साथ न हों किन्तु मूल वेद संहिताओं के साथ तो मोटे अक्षरों में मिलते ही हैं, वेद भाष्य पुस्तकों पर प्रायः नहीं मिलता

किसी प्रकाशक से भूलवशात् छूट जाये तो पृथक् बात है। आप वेद भाष्य के साथ भी इन ऋषियों के नाम चाहते हैं, जैसे वेदभाष्य कर्त्ता का नाम मिलता है वैसे वेद भाष्य की पुस्तक पर अङ्गिरा आदि ऋषियों का नाम भी होवे। ऐसा किया जा सकता है, यह बात भाष्य पुस्तक के सम्पादक, भाष्यकार और प्रकाशक पर निर्भर करती है। यदि वे इस पर ध्यान दें तो ये हो सकता है। आपको वेद भाष्य पुस्तकों पर आदित्य आदि ऋषियों के नाम नहीं मिले, इसका कारण यह कदापि प्रतीत नहीं हो रहा कि किसी दुर्भावना से उनके नाम नहीं दिये अपितु इसलिए कि इस बात को अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं समझा अथवा इस ओर ध्यान नहीं गया। वैसे भी वेद से सम्बन्ध रखने वाले लोग प्राय: जानते हैं कि कौनसा वेद किस ऋषि से सम्बन्ध रखता है, उनके लिए इसकी आवश्यकता नहीं। हाँ अन्य जन साधारण के लिए नाम लिखा जा सकता है। जिस ऋषि ने जिस वेद को प्राप्त किया उस ऋषि का नाम, प्राप्त हुए वेद के साथ मिलता है। उन ऋषियों ने परमेश्वर के अनुग्रह से पूरे वेद का ज्ञान प्राप्त किया इसलिए एक-एक मन्त्र के साथ उनका नाम न होकर पूरी वेद संहिता के साथ उनका नाम मिलता है।

आपको बता दें कि जो मन्त्रों के साथ ऋषियों के नाम उपलब्ध हो रहे हैं वे नाम प्राय: उनके वास्तविक न होकर गौणिक नाम मिलते हैं। अनेक ऋषियों के नाम उनके गौत्र के आधार पर मिलते हैं और अनेकों के मन्त्रार्थ को प्रत्यक्ष करने से अर्थात् उस मन्त्र के विषय के आधार पर व अनेकों के मन्त्र में आये शब्द के आधार पर नाम मिलते हैं। अस्तु

इस लेख को लिखने में आचार्य रामनाथ जी वेदालंकार की पुस्तक आर्ष ज्योति का मुख्य सहयोग लिया गया है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार

गत विश्व पुस्तक मेले में सभा द्वारा पांच हजार सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी), दो हजार सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी), ऋषि दयानन्द की जीवनी पाँच हजार, दो हजार सी.डी. का नि:शुल्क वितरण किया। जिसकी सज्जनों द्वारा बहुत प्रशंसा की गई। अब सज्जनों का फिर उसी प्रकार के कार्यक्रम की मांग कर रहे हैं।

इस बार सभा ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सत्यार्थप्रकाश को चार भाषाओं में वितरित करने की योजना बनाई है, क्रमश: हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

ऋषि जीवनी भी अंग्रेजी, हिन्दी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जा रही है। सभी धर्मानुरागियों से निवेदन है, इस कार्य के लिए आप जितना अधिक सहयोग प्रदान करेंगे। सभा उतने ही विशाल रूप में इस कार्यक्रम को सम्पन्न करेगी। पूर्व की भाँति आपका सहयोग व समर्थन प्राप्त होगा।

सहयोग राशि निम्न क्रमांक के खातों में जमा कराई जा सकती है अथवा बैंक ड्राफ्ट, चेक द्वारा प्रेषित कर कार्यालय में जमा कराई जा सकती है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

संस्था - समाचार

१६ से ३१ जुलाई २०१४

१. यज्ञ एवं प्रवचन - परमपिता परमेश्वर की कृपा से, सभा कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ से व आप सभी के सहयोग से पिछले दिनों भी सभा की सभी गतिविधियाँ यथा- प्रातः सायं यज्ञ, प्रवचन, वृष्टियज्ञ, गुरुकुल, अतिथियों-आश्रमवासियों के लिए भोजन, गौशाला, चिकित्सालय, परोपकारी पत्रिका व अन्य ग्रन्थों का प्रकाशन, जनसम्पर्क व प्रचार अभियान आदि यथावत् चलती रही।

प्रातः प्रवचन क्रम में डॉ. धर्मवीर जी ने शिवसंकल्प सूक्त के पाँचवें, छठे मन्त्र की व्याख्या की तथा अपनी पंजाब प्रचार यात्रा के अनुभवों को सुनाया। पाँचवें मन्त्र-

यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि हमारे मन में ऋक्-यजुः-साम व अथर्व इन चारों वेदों को अपने में स्थापित (प्रतिष्ठित) करने का सामर्थ्य है। जन सामान्य प्रायः मन शब्द से विवेचना करने वाले आन्तरिक यन्त्र लेता है जो कि इसके पूर्ण स्वरूप का एक पक्ष मात्र है। वस्तुतः अन्तःकरण के चार भेद होते हैं- मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार। इन चारों को ही हमारे शास्त्रों में संयुक्त रूप से अन्तःकरण कहा जाता है। इस प्रसंग में आपने बताया कि यह हमारा मन यद्यपि अत्यधिक सूक्ष्म है लेकिन इसका सामर्थ्य बहुत अधिक है। हम जो भी अच्छे या बुरे कर्म करते हैं, उन कर्मों की छाप (संस्कार) हमारे मन में एकत्रित होती जाती है और अनुकूल समय आने (आलम्बन मिलने) पर ये संस्कार व्यक्ति को अच्छे या बुरे कर्म में प्रवृत्त कराते हैं। इन नए कर्मों की पुनः उत्तरोत्तर दृढ़ छाप बनती जाती है, जो थोड़े से प्रयत्न करने पर (या अधिक प्रबल संस्कार होने पर केवल इच्छा मात्र को उत्पन्न करने पर) व्यक्ति को तत्तत् कर्मों में प्रवृत्त करा देते हैं। अतः हमें सदा अच्छे कर्म कर अच्छे संस्कार ही एकत्रित करना चाहिए। छठे मन्त्र-

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभिशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि यहाँ मन्त्र में अलंकार का सुन्दर प्रयोग है। कहा गया है- जैसे सारथि घोड़ों को लगाम से यथेष्ट स्थानों पर ले जाता है, उसी प्रकार यह मन भी हमें यथेष्ट को प्राप्त कराता है, प्राप्त कराने का सामर्थ्य रखता है। अलंकार सौन्दर्य वर्धक होता है, जब कोई व्यक्ति शरीर में अलंकार धारण करता है तो उसका सौन्दर्य बढ़ता ही है, इसी प्रकार जब शास्त्र में इसका विधान किया जाता है तो उसके शास्त्रीय सौन्दर्य में वृद्धि होती ही है। इसके अतिरिक्त -

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।।
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः।।

(कठोपनिषद् १/३/३-४)

जैसे प्रसंगों में भी रथ की उपमा के माध्यम से आत्मा, बुद्धि, मन, इन्द्रियाँ और शरीर के परस्पर सम्बन्ध को बताया गया है।

जीवों को जो-जो शरीर प्राप्त होते हैं उनमें मानव शरीर सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि यही एक ऐसा शरीर (रथ) है जो सभी संसाधनों से युक्त है, मानव शरीर में ही आत्मा को कर्म करने की स्वतन्त्रता है। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, अहंकार इत्यादि, व्यक्ति इनका यथेष्ठ प्रयोग कर सकता है। अतः यह रथ आत्मा के रहने के लिए सबसे अधिक अनुकूल है, उपयुक्त है।

दिनांक २७ जुलाई को अपनी पंजाब यात्रा की चर्चा करते हुए आपने बताया कि आप, प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु, आचार्य सोमदेव, आचार्य कर्मवीर पिछले दिनों पंजाब में जनसम्पर्क व प्रचार के कार्य हेतु जब गए तो इस यात्रा में जिज्ञासु जी के साथ होने का विशेष लाभ रहा। जिज्ञासु जी ऐसे व्यक्ति जो सभी स्थानों का इतिहास जानते हैं, ८२ वर्ष की अवस्था होते हुए भी स्मरण शक्ति अच्छी है, इस उम्र में भी घूम लेते हैं और जोश तो उनमें युवकों सा दिखाई देता है। जब हम लोग ऋषिभक्त-स्वतन्त्रता सेनानी लाला लाजपत राय जी का स्मृति संग्रहालय देख रहे थे, तो आचार्य सोमदेव जी की दृष्टि वहाँ रखी एक उर्दू की पुस्तक पर पड़ी, जिसमे देवनागरी लिपि में 'ओ३म्' लिखा था (इसका चित्र इसी अंक में कवर पृष्ठ २ पर देखें)।

सोमदेव जी ने जिज्ञासु जी को बताया, जिज्ञासु जी को पुस्तक पहचानते देर न लगी। पुस्तक देखते ही जिज्ञासु जी उछल पड़े। जिज्ञासु जी को देख हमें लग रहा था कि कुछ विशेष मिला है। पुनः जिज्ञासु जी ने समझाते हुए बताया कि यह तो पं. चमूपति जी का हस्तलिखित कविता संग्रह है जिसमें 'खाके-शहीदां' (हुतात्माओं की मिट्टी) जैसी कविताएँ हैं, पण्डित जी ने इस संग्रह को एक विशेष अवसर पर भेंट किया था (इस विषय में विशेष प्रकाश आगामी तड़प-झड़प में डाला जाएगा)। पुनः कार्यकारी प्रधान जी ने बताया कि सभा अधिकारिक तौर पर इसकी प्रतिलिपि लेने का प्रयास करने वाली है।

इन प्रचार कार्यक्रमों का महत्त्व बताते हुए आपने एक दृष्टान्त सुनाया- एक आर्य परिवार की बेटी का विवाह, एक अन्य आर्य परिवार के युवक के साथ निश्चित हुआ। इस क्रम में लड़की ने शर्त रखी कि विवाह संस्कार चर्च में ही सम्पन्न होगा। जब इस अप्रत्याशित शर्त का कारण खोजा गया तो परिवार का एक बूढ़ा व्यक्ति बोला- हमारे यहाँ कोई आर्य विद्वान्/भजनोपदेशक तो आते नहीं, कुछ सिद्धान्त की बात सुनाते नहीं तो ये नई पीढ़ी हमारे सिद्धान्तों से अनजान होती चली गई। फिर इन्हें कहीं तो जाना था, ईसाइयों का पुरुषार्थ ऐसा रहा कि इसने चर्च में जाना शुरु कर दिया। जब हम अपने परिचितों-अपरिचितों के मध्य आते-जाते नहीं तो वे लोग धीरे-धीरे सिद्धान्त से अनभिज्ञ होते जाते हैं और ऐसा परिणाम आना कोई आश्चर्यजनक नहीं है। अतः हमें इनके मध्य सिद्धान्त प्रचार अवश्य करते रहना चाहिए ताकि जो आर्य हैं वे आर्य बने रहें और जो नहीं हैं वे बनते चलें।

अपने प्रातःकालीन प्रवचन के क्रम में आचार्य सत्येन्द्र जी ने मनुस्मृति का स्वाध्याय कराते हुए बताया कि स्वास्थ्य के तीन स्तम्भों में आहार की अपनी महत्ता है। व्यक्ति को अपने आहार पर ध्यान देना चाहिए। हमारा आहार शुद्ध सात्विक होना चाहिए। शुद्ध सात्विक आहार को भी विधि पूर्वक ग्रहण करना चाहिए। जब व्यक्ति भोजन करें तो आदर व श्रद्धापूर्वक भोजन ग्रहण करें, भोजन को देखकर उसके मन में प्रसन्नता व उल्लास की भावना उत्पन्न होनी चाहिए-

पूजयेदशनं नित्यमद्याच्चैतदकुत्सयन्।
दृष्ट्वा हृष्येत्प्रसीदेच्च प्रतिनन्देच्च सर्वशः।।

(मनु. २/२९)

क्योंकि जब व्यक्ति भोजन को श्रद्धा व आदर पूर्वक ग्रहण करता है तो यह सदैव उसको बल और स्फूर्ति प्रदान करता है। लेकिन जब अनादर पूर्वक किया जाता है तो वह उसको हानि ही पहुँचाता है-

पूजितं ह्यशनं नित्यं बलमूर्जं च यच्छति।
अपूजितं तु तद् भुक्तमुभयं नाशयेदिदम्।।

(मनु. २/३०)

दुर्भाग्य से आज हमारे यहाँ ऐसी परम्परा चल पड़ी है कि कहीं और परस्पर बात की जाए या न की जाए लेकिन भोजन करते समय अवश्य ही बात की जाती है या फिर व्यक्ति भोजन करते समय दूरदर्शन देखना, संगीत सुनना, समाचार पत्र या अन्य कोई पुस्तक पढ़ना आदि क्रियाएँ भी करते रहता है, वस्तुतः यह ऐसा करना भोजन का अनादर है और जब व्यक्ति आचमन पूर्वक, श्रद्धा व आदर से प्रत्येक निवाले को अच्छी तरह चबाते हुए इस विचार के साथ ग्रहण करता है कि यह मुझमें बल व स्फूर्ति देगा, तो यह भोजन का आदर करना हुआ। इसी प्रकार आज समाज में परस्पर झूठा खाना-खिलाना अच्छा माना जाता है। लेकिन यह शास्त्र विरुद्ध है। महर्षि मनु व महर्षि दयानन्द अपने ग्रन्थों में इसका स्पष्ट निषेध करते हैं।

पुनः सायंकालीन प्रवचन के क्रम में गौकरुणानिधि का स्वाध्याय कराते हुए आपने बताया कि जो-जो दूसरों को हानि पहुँचाने वाले कर्म हैं वे अधर्म होने से त्याज्य हैं, इन्हीं कर्मों में मांस भक्षण भी है। अतः व्यक्ति को कभी भी मांस नहीं खाना चाहिए। इस विषय में महर्षि दयानन्द का स्पष्ट मत है कि जब एक आत्मा की हानि करने से चोरी आदि कर्म पाप में गिने जाते हैं तो गाय आदि पशुओं को मारकर बहुतों की हानि करना, तो महापाप है ही। इस पर कोई व्यक्ति कह सकता है कि अच्छा तो हानि पहुँचाना पाप हुआ लेकिन जब कोई पशु काम में न आवें, बूढ़ा हो जाए या मर जाए तो उसका मांस तो खाया ही जा सकता है। तो महर्षि दयानन्द इसका स्पष्ट निषेध करते हुए कहते हैं कि इसमें ऐसा ही दोष होगा जैसे अपने बूढ़े माता-पिता को मारकर, उनका मांस खाने में होगा। इसके साथ-साथ मांस खाने से जो स्वभाव में जो हिंसकपना आता है इसके दोष से मांसाहारी व्यक्ति कैसे बच सकता है।

आचार्य सोमदेव जी ने अपने प्रवचन क्रम में आर्य समाज का इतिहास, महाभारत आदि के प्रसंग से अत्यन्त प्रेरणादायी उद्बोधन दिया। महामहोपाध्याय पं. युधिष्ठिर

जी का उद्धरण देते हुए आपने आर्यसमाज के स्वर्णिम युग के रोचक दृष्टान्त श्रोताओं के समक्ष उपस्थित किए। एक बार जब किसी जिज्ञासु को पता चला कि अमुक स्थान में अमुक दिन पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी का भाषण होगा, तो वह सारे कार्यों से अवकाश लेकर प्रवचन सुनने पहुँच गया। वहाँ देखा तो अभी पण्डाल का साज-सजावट चल रही है तो उसने झाड़ू लगा रहे युवक से पूछा- अरे भाई, पण्डित गुरुदत्त जी का प्रवचन यहाँ ही होगा क्या? उस झाड़ू लगाने वाले ने कहा- हाँ, यहाँ ही होगा। पुनः तैयारी पूरी हुई, संचालक ने मंच में गुरुदत्त जी को आमन्त्रित किया। तो मंच की ओर बढ़ते हुए गुरुदत्त जी को देखकर उस युवक की आँखे फटी की फटी रह गई। अरे ये क्या? ये तो वह झाड़ू लगाने वाला है। महानुभाव ऐसे थे हमारे उद्भट प्रकाण्ड विद्वान् कि जरूरत पड़े तो झाड़ू भी लगा दे। पुनः आज की स्थितियों की इसमें तुलना कर आचार्य जी ने खेद प्रकट किया कि आज के तथाकथित उपदेशक शर्त रखते हैं कि आप हमें मंच बनाकर दे, श्रोता लाकर दें, मैं तो प्रवचन करूँगा। क्या ऐसे आर्यसमाज का प्रचार हो सकता है?

दिनांक २४ जुलाई को अपने उद्बोधन में आचार्य रविन्द्र जी ने मोक्ष के स्वरूप पर प्रकाश डाला। आचार्य जी ने बताया कि मोक्ष से सभी दुःखों से छूट जाना या परमात्मा का असीम आनन्द प्राप्त करना या यथेष्ट इच्छा की पूर्ति का होना, ये तीनों ही अर्थ लिए जा सकते हैं। वस्तुतः ये तीनों ही परिस्थितियाँ एक ही अवस्था में सम्भव हैं। अविद्वान् मोक्ष में जाना नहीं चाहता क्योंकि उसे लगता है कि मोक्ष में जाने से इह लौकिक सुखों से (गाड़ी, बंगला आदि नाना भोग्य पदार्थों के सुख से) वह वंचित हो जाएगा। वस्तुतः मोक्ष में इन सुखों से अतुलनीय अधिक सुख की प्राप्ति होती है। अतः हमें मोक्ष विषयक एवं उसकी प्राप्ति विषयक शंकाओं का समाधान शास्त्रों के माध्यम से कर लेना चाहिए।

२. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम- (क) ८ जुलाई २०१४- ब्यावर में प्रचार कार्यक्रम।

(ख) ९ जुलाई २०१४- परबतसर में प्रचार कार्यक्रम।

(ग) पंजाब प्रचार यात्रा- १३ जुलाई २०१४ को अजमेर से लाडनूँ, सुजानगढ़ आदि स्थानों में ठहरते हुए अबोहर पहुँचे। पुनः वहाँ से १४ जुलाई को फाजिल्का, झूमियावाली, १५ जुलाई को फिरोजपुर, मोगा, जगराव, लुधियाना, १७ जुलाई को करतारपुर, जालन्धर, १८ जुलाई को अमृतसर, १९ जुलाई को जम्मू, पठानकोट, पुनः २० जुलाई को अमृतसर, जालन्धर, २१ जुलाई को कुरुक्षेत्र, गुड़गाँव होते हुए अजमेर वापस। उपरोक्त स्थानों में आर्य परिवारों, विद्वानों, भजनोपदेशक से सम्पर्क किया।

(घ) ३०-३१ जुलाई २०१४- आर्यसमाज तिलक नगर रोहतक के कार्यक्रम में भाग लिया।

आगामी कार्यक्रम- (क) ११ से १७ अगस्त २०१४- भुवनेश्वर (ओडिशा) में कार्यक्रम।

(ख) १८-२४ अगस्त २०१४- कालकाजी आर्यसमाज, नई दिल्ली के कार्यक्रम में भाग लेंगे।

३. आचार्य सत्यप्रिय जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम- (क) ३ जुलाई २०१४- बैतूल (म.प्र.) निवासी श्री प्रकाश वर्मा के यहाँ पारिवारिक यज्ञ कर एवं सत्संग प्रदान किया।

(ख) ४ से ७ जुलाई २०१४- ग्रा. चिचौली, बैतूल, म.प्र. में आर्यसमाज चिचौली के माध्यम से समायोजित वृष्टियज्ञ सम्पन्न कराया।

(ग) ७ से ८ जुलाई २०१४- आर्यसमाज ताजनगर में यज्ञ, प्रवचन एवं जनसम्पर्क का कार्यक्रम।

४. संस्कृत सम्भाषण शिविर- सभा के प्रचारक श्री उपाध्याय भैरुलाल जी ने राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय एवं राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय गंज, अजमेर में क्रमश ७ से १९ जुलाई २०१४ एवं १० से १९ जुलाई २०१४ को संस्कृत सम्भाषण का प्रशिक्षण प्रदान किया। इति।।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

आर्यजगत् के समाचार

१. पं. ओमप्रकाश वर्मा, भजनोपदेशक अस्वस्थ। दूरभाष नं. ०९३१५८२२४६२

२. यज्ञ का आयोजन- आर्य समाज डोहरिया, तहसील शाहपुरा, जिला भीलवाड़ा के तत्त्वावधान में दिनांक १९ से २१ जुलाई २०१४ तक वृष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया। हवन सामग्री में ११ प्रकार की औषधियाँ डालकर गाय के घृत की आहुतियाँ दी गई। इस दौरान रात्रि में वर्षा होती रही और ग्रामवासी सब प्रसन्न हुये और बीज बोने का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

३. अध्ययन प्रारम्भ- अध्यात्म पिपासुओं के लिए अद्वितीय ग्रन्थ (ग्यारह) उपनिषदों का धारावाहिक अध्ययन वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात) में पिछले श्रावण शुक्ल प्रथमा (तद्नुसार २८/०७/२०१४) सोमवार से प्रारम्भ हुआ है। स्वामी मुक्तानन्द इन ग्यारह उपनिषदों का अध्यापन क्रम से करा रहे हैं। इसके पश्चात् वेदान्त दर्शन का भी अध्यापन कराया जाएगा। उपनिषद् की कक्षा में चार ब्रह्मचारियों के साथ-साथ अन्य दस साधकगण अध्ययन कर रहे हैं जिनमें वानप्रस्थी महानुभाव, माताएँ व भद्रपुरुष सम्मिलित हैं।

४. शिविर सम्पन्न- महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर, राजस्थान स्थित आर्य समाज में दस दिवसीय निःशुल्क संस्कृत सम्भाषण शिविर का आयोजन दिनांक १४ से २३ जुलाई २०१४ तक हुआ जिसमें लगभग २५ प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिदिन सम्मिलित होकर सम्भाषण में निपुणता अर्जित की। दिनांक २३/७/२०१४ को समापन के अवसर पर संस्कृत महाविद्यालय, बीकानेर के प्राचार्य श्री रामगोपाल जी शर्मा ने प्रश्नोत्तर के माध्यम से लाभार्थियों का आंकलन करते हुए अल्पकाल में ज्ञान अर्जन की सराहना की।

५. वैदिक सत्संग- १३ जुलाई २०१४ को आर्य समाज विज्ञाननगर, कोटा, राजस्थान में आर्य महिलाओं ने पूर्णिमा वैदिक सत्संग का अयोजन किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में देव यज्ञ किया गया। यज्ञ की मुख्य यजमान श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्रीमती दीपा दुबे व श्रीमती दीपा रस्तोगी रहीं तथा यज्ञ श्रीमती इन्दिरा पाण्डेय के पुरोहित्व में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के अन्त में आर्य समाज विज्ञाननगर की उपप्रधाना श्रीमती अनिता शर्मा ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

६. वेद प्रचार सम्पन्न- आर्यसमाज मगरा पूंजला, जोधपुर, राजस्थान का वेद प्रचार प्रतिवर्ष की भाँति २१ से २३ जुलाई २०१४ तक उच्च माध्यमिक विद्यालयों में श्री अमरसिंह भजनोपदेशक द्वारा रखा गया। वेद प्रचार से इन विद्यालयों के करीब तीन हजार से अधिक छात्र और करीब एक सौ पचास अध्यापक और अध्यापिकाएँ लाभान्वित हुए।

७. सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न- आर्य समाज गंगापुर सिटी, जि. सवाई माधोपुर, राजस्थान में १४ जुलाई से चल रहे सामवेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रवचन कार्यक्रम का दिनांक २० जुलाई २०१४ रविवार को बड़े ही हर्षोल्लास पूर्ण वातावरण में समापन हुआ।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डा. हरिशंकर अग्निहोत्री (आगरा) थे, मधुर भजनोपदेषक - नरेशदत्त (बिजनोर, उ.प्र.) एवं ब्रह्मचारिणी नीलम ने मधुर स्वर से वेद मन्त्रों का पाठ किया।

८. विशाल वृष्टि यज्ञ सम्पन्न- आर्य समाज शाहपुरा, जि. भीलवाड़ा, राजस्थान के तत्त्वावधान में दिनांक १३ से १७ जुलाई २०१४ तक पाँच दिवसीय वृष्टि यज्ञ सम्पन्न हुआ। विशिष्ट विद्वान् पं. वेदप्रिय जी शास्त्री, सीताबाड़ी बांरा (राज.), पं. शिवदत्त जी पाण्डे, सुल्तानपुर (उ.प्र.), श्री रघुनाथ देव जी वैदिक, एटा (उ.प्र.) व श्री डा. जितेन्द्र कुमार जी शास्त्री, शाहपुरा (भीलवाडा, राज.) के नेतृत्व में सम्पन्न किया गया। पाँचों दिन विद्वानों के प्रवचन व भजनोपदेश होते रहे। पूर्णाहुति का कार्यक्रम समारोह पूर्वक आयोजित किया गया।

चुनाव समाचार

९. आर्य समाज भिलाई नगर, जि. दुर्ग, छ.ग. के चुनाव में **प्रधान**- श्री अवनी भूषण पुरंग, **मन्त्री**- श्री रवि आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री रविन्द्र गुप्ता को चुना गया।

शोक समाचार

१०. मन्त्री महेश सोनी को भातृ शोक- २४/६/२०१४ को अस्सी वर्षीय श्री मनोहर लाल जी आर्य वर्तमान मन्त्री महेश सोनी के अग्रज थे। श्री आर्य प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर, राज. से कार्यालय अधीक्षक पद से १९९२ में सेवानिवृत्त हुए थे। तत्पश्चात् वे समाज को अपनी निःशुल्क सेवाएँ दी।

ऋषि उद्यान में वैशेषिक दर्शन का अध्ययन कर रहे ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी एवं अन्य साधकगण

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : १५ अगस्त, २०१४ ३९५९/५९

संस्कृत अकादमी, हरयाणा सरकार द्वारा बाणभट्ट सम्मान से सम्मानित

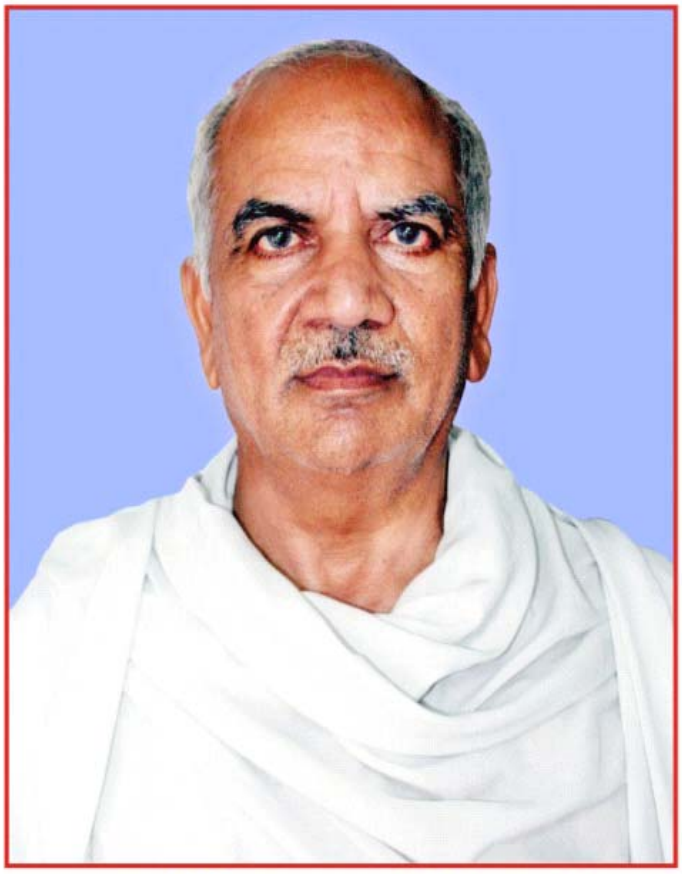

आचार्य विरजानन्द जी दैवकरणि

सम्बन्धित विवरण पृष्ठ ३० पर

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकिट

Design@ Mittal 9829797513